प्रकाशक—
पूज्य काशीराम जैन
पुस्तक प्रकाशक समिति
नया शहर बोमाबा

द्वितीय आवृत्ति एक सहस्र

वीर सं २४८८
वि सं २०१८
ई सं १९६१
श्री सो सं २७

मूल्य ५ न प

मुद्रक—
राजकुमार जैन
राजरत्न प्रेस
मिलाप रोड
जालन्धर शहर।

प्रस्तावना

मानव विकास की वास्तविक आधार शिला महापुरुषों की जीवनिया तथा विचार ही होते है। उनके द्वारा समय-समय पर प्रदर्शित विचार हमारे जीवन मे सच्चे आदर्श बनकर हमे अज्ञान रूपी अन्धकार से निकाल कर ज्ञान रूपी प्रकाश की ओर लाते हैं। क्योंकि यह जगत वास्तव मे मनुष्य का परीक्षा स्थल है। जब मनुष्य चारो ओर से कठिन परिस्थितियो द्वारा घिरा हुआ होता है और उसको इस अपार संसार मे कहीं भी कोई सहारा नजर नहीं आता, ऐसे कठिन समय में महापुरुषों द्वारा कथित विचार ही उसके जीवन मे नया मोड लाने मे प्रकाश प्रदान करते हैं। जब कोई मनुष्य अज्ञान रूपी अन्धकार मे फस कर अपना भला-बुरा सभी कुछ भुला बैठता है और पाप तथा पुण्य में कुछ भी अन्तर न समझता मानवता से परे भागता हुआ दानवता को अपना लेता है। यदि ऐसे मनुष्य ने महापुरुषों के विचारों का कुछ भी अध्ययन किया हो तो वह विचार किसी भी समय विकसित होकर उसके जीवन को सुधारने मे एक विशेष साधन बन जाते हैं तथा उसे मानव जीवन सफल बनाने मे सहयोगी सिद्ध होते हैं।

मनुष्य की उन्नति के लिये, उसे ससार के मनुष्यों में उच्च बनाने के लिये, उसके कार्यों मे सफलता और मनोहरता लाने के लिये आत्म-विश्वास तथा आत्म-समान की अत्यन्त आवश्यकता है। आत्म-निर्भरता भी इन्हीं के साथ रहनी चाहिये। परन्तु यह गुण हमें तभी प्राप्त हो सकते हैं, जब हम ने महापुरुषों के विचारो का कुछ भी मनन किया हो। क्योंकि विचारों का मन तथा मस्तिष्क पर अद्भुत प्रभाव पड़ता है और उसी के अनुसार हम फिर आगे क्रियाशील भी होते हैं। इसलिये विचारों के महत्व

को देखते हुए भी हरिश्चन्द्र जी महाराज ने "महापुरुषों के विचारों" ...
सुन्दर संग्रह पुस्तक रूप में आपके सम्मुख प्रस्तुत किया है । आशा है ...
सज्जन इस पुस्तक को पढ़ कर लाभ उठाने का प्रयत्न करेंगे और जब ...
आप किसी ऐसे व्यामोह रूप संभ्रम में ग्रस्त होंगे यह विचार आपकी ...
भ्रान्तियों को निवारण करने में सहायक होंगे । ऐसा मेरा अपना विश्वास है ।

इस पुस्तक के प्रकाशन में एक विशेष बात का ध्यान रखा गया है
कि प्रत्येक विचार के साथ २ उस महापुरुष का नाम भी दिया है ताकि
आपकी जिज्ञासा प्रवृत्ति बनी रहे और आप उन महापुरुषों को और ...
निकट से जानने का प्रयत्न करें । आशा है । पाठक वर्ग इसके अध्ययन से
बहुत कुछ ज्ञान प्राप्त करके अपने जीवन सुधार के साथ २ प्रयास कर्ता के
प्रयत्न को भी सफल करेंगे ।

महेश चन्द्र जैन (प्राध्यापक)
डी० बी० हाई स्कूल
जालन्धर छावनी

समिति के सदस्य

१	श्रीमान्	ला० नन्द लाल गोवर्द्धन दास जैन	उड़मुड़ अहियापुर
२	,,	ला० रोशन लाल राजेन्द्र कुमार जैन	,,
३.	,,	ला० हरबस लाल जैन	,,
४	,,	ला० सरखो लाल सरदारी लाल जैन	,,
५	,,	ला० रूड़ा मल बनारसी दास जैन	बलाचौर
६	,,	ला० लाहौरी राम नेक चन्द जैन	,,
७.	,,	ला० राजामल तरलास चन्द जैन	,,
८	,,	ला० ज्ञान चन्द जैन	,,
९	,,	ला० रोशन लाल तरसेम कुमार जैन	,,
१०	,,	ला० खजांची लाल दीवान चन्द जैन	,,
११	,,	ला० मेहर चन्द शीतल दास जैन	जीरा
१२	,,	ला० शीतल दास कैलाश चन्द्र जैन	,,
१३	,,	ला० शीतलदास यशदेव जैन	,,
१४	,,	बाबू काशी राम जैन अर्जीनवीस	,,
१५	,,	बाबू अमीर चन्द मोहन लाल जैन	,,
१६	,,	ला० निरजन दास यशदेव जैन	,,
१७	,,	ला० काकाराम ओम प्रकाश जैन	,,
१८	,,	ला० बसन्तमल लाहौरी राम जैन	बगा
१९.	,,	ला० कावली मल रूड़ा मल जैन	,
२०	,,	ला० बसन्तामल चरण दास जैन	,,
२१	,,	ला० चम्बा राम, मास्टर सुरेश चन्द जैन	,,

२२		ला कांशी राम मोकम चन्द जैन	
२३		बाबू मेहर चन्द रूलदू राम जैन	,,
२४		ला रतन चन्द सरदारी लाल जैन	
२५		ला किशन चन्द धर्म चन्द जैन	
२६		ला मुनि लाल पोरी ठाकर जैन	रोपड़
२७	,,	ला मखन सैन बनारसी दास जैन	
२८	,,	ला मेहरचन्द हरि चन्द जैन	
२९		ला मुन्नी लाल पूर्ण चन्द जैन	,,
३	,,	ला देस राज चिमन लाल जैन	
३१		ला अमर चन्द चन्द सूरज जैन	
३२	श्रीमान्	ला धर्म प्रकाश सुदर्शन कुमार जैन	
३३		ला ओम प्रकाश जैन पुण्य स्मृति ला नरसा राम जैन	,,
३४		ला फूल चन्द तरसेम कुमार जैन	
३५		ला बालक चन्द मस्ती राम जैन	
३६		ला ओम प्रकाश अग्रवाल जैन	
३७		ला बख्तावर मल पैंच सन्त जैन	
३८	,,	ला रोशन लाल जैन	जम्मू
३९		ला सरदारी लाल जैन	
४		ला तिलक चन्द जैन	
४१		ला नगीन चन्द जैन	,,
४२		ला नरपत राय धर्म पाल जैन	अम्बाला शहर
४३	,,	ला बरैती राम मुन्नी लाल जैन	
४४	,,	बाबू राजेन्द्र कुमार एम. ए.	अम्बाला छावनी
४५		ला हरी राम किशोरी लाल जैन नवां शहर	
४६		बाबू तरसेम लाल जैन सायुनगरा बैंक	,,

४७ ,, ला० रामा नन्द जैन होजरी माधोपुरी लुधियाना
४८ ,, बाबू विजय कुमार एल टी अरकी
४६ ,, ला० लाहौरी राम जिया लाल अग्रवाल जैन, कुराली
५० ,, ला० भीम सैन अग्रवाल जैन धूरी मण्डी
५१ ,, ला० मनसा राम चरजी लाल जैन फरीद कोट
५२ ,, ला० लखपत राय अमरजीत अग्रवाल जैन तलवंडी

महिला सदस्य

५३ श्रीमती प्रकाशो देवी धर्मपत्नी लाला सुन्दर दास जैन रोपड़
५४ ,, पूर्णी देवी ,
५५ ,, शकुन्तला देवी धर्मपत्नी सोम प्रकाश जैन जीरा
५६ ,, मालन देवी धर्मपत्नी मेहर चन्द जैन ,,
५७ ,, विमला देवी धर्मपत्नी शान्ति प्रकाश अग्रवाल जैन ,,
५८ ,, माया देवी धर्मपत्नी खजानची लाल जैन मगा

नये सदस्य

५६ श्रीमान् ला० ज्ञान चन्द कस्तूरी लाल जैन फरीदकोट ५१ रुपये
६० ,, ला० किशोरी लाल मनोहर लाल जैन ,, ५१ ,,
६१ ,, ला० अमर नाथ जैन एण्ड सन्ज ,, २५ ,,
६२ ,, ला० नेम चन्द देवेन्द्र कुमार जैन ,, २५ ,,
६३ ,, ला० उत्तम चन्द देस राज जैन ,, २५ ,,
६४ ,, ला० हरबस लाल जैन ,, २५ ,,
६५ ,, ला० हरकिशन दास एण्ड सन्ज ,, २५ ,,
६६ ,, ला० डाल चन्द बहादर चन्द जैन हनुमानगढ़ ८२ रुपये
६७ ,, ला० राम चन्द गोपाल चन्द जैन ,, ५१ ,,

६८	ला० बनारसी लाल जैन		५१
६९.	ला० मालक मल चौम मल जैन	,,	२५
७०	बाबू ब्रह्मा राम जैन वकील		२५
७१	ला० मदन लाल जैन		५ ,,
७२	ला० लाल चन्द विद्या रत्न जैन		१२५
७३	,, वैद्य राम लाल जी अग्रवाल जैन	[illegible]	२५ ,,
७४	,, ला० पन्ना लाल प्रकाश चन्द जैन	,,	५१
७५.	बाबू कंवर सैन जैन केमिस्ट		५१
७६	अमर चन्द अग्रवाल जैन		२५
७७	कपूर चन्द जसवन्त राय		१५
७८.	ला० तीर्थराम जैन होशियारपुर		१

इन दानवीर सदस्यों के पुनीत सहयोग से पांच हजार 'सुन्दर बोल' पुस्तक और एक सहस्र 'महापुरुषों के विचार' नामक पुस्तकों का प्रकाशन हुआ है। मैं समिति की ओर से उक्त महानुभावों का उनकी उदारता के लिए सादर धन्यवाद करता हूं।

नोट—उक्त समिति का कार्यालय पूरी मण्डी से स्थानान्तर होकर नवांशहर दोआबा (जालन्धर) में आ गया है।

महापुरुषों के विचार

जिस मे ऐश्वर्य, वीर्य, धर्म, यश, श्री, ज्ञान, वैराग्य तथा मोह आदि महान गुणो की समष्टि हो सके उसे शास्त्रो मे 'भग' कहा है जो इन मे युक्त हो वह भगवान है।

—जिन वाणी

× × × ×

जिन के तन, मन और वाणी मे पुण्य रूपी अमृत भरा है, जो अपने उपकारो से तीनो लोको को तृप्त करते है और जो दूसरे के प्रमाणु समान गुणो का पर्वत के समान बढा कर अपने हृदय मे प्रसन्न होते हैं—ऐसे सत्पुरुष इस जगत मे विरले ही है।

—भर्तृहरि

× × × ×

झूठे की सगति से ठगाना होगा, मूर्ख शुभेच्छु होने पर भी अहितकर ही होगा, कृपण अपने स्वार्थ के लिये दूसरे को अवश्य हानि पहुँचायेगा, नीच आपत्ति के समय दूसरे का नाश करेगा।

—सादिक

× × × ×

✓जिस की मगति म-फिर वह व्यक्ति हो समाज हो या संस्था हो—अपूर्णता मालूम हो वहां पूर्णता लाने का प्रयत्न करना अपना धर्म है। गुणों की अपेक्षा दोष बढ़ते हों तो उसका त्याग असहयोग-धर्म है। यह सिद्धान्त है।

—गांधी

× × + ×

जिस को अपने मन का होश हो वह मनुष्य है। मन का होश माने भगवत् प्राप्ति के लिये यात्रा का प्रारम्भ। भगवान् को पाना माने अपने को पाना और अपने को पाना माने भगवान् को पाना।

—प्रमाण

× × × ×

✓कभी-कभी तुम ऐसा क्यों कहते हो कि मेरे पास कुछ भी नहीं है? इन्सान के पास सब कुछ है। उस के पास देखने के लिये आंख है सुनने के लिये कान हैं और अपना भविष्य बनाने तथा किस्मत सजाने के लिये बलवान हाथ है।

—जिन वाणी

× × × ×

जो अपनी आत्मा के अन्दर ही मुख्य आनन्द और रोशनी पाता है वही परमेश्वर में लीन होकर मुक्ति प्राप्त करता है।

—गीता

स्वास्थ्य सब से अच्छा वरदान है, सतोष सब से बढिया धन है, सच्चा मित्र सब से बडा आत्मीय है, निर्वाण उच्चतम आनन्द है।

—बुद्ध

× × × ×

सब से महान आदमी वह है, जो दृढतम निश्चय के साथ सत्य का अनुसरण करता है।

—सेनेका

× × × ×

मनुष्यत्व प्राप्त करने के बाद जब पारमार्थिक भाव मनुष्य के मन मे आने लगते हैं, तब वह मोह की सीमा पार कर अति मानव हो जाता है। मनुष्य अभाव पूर्ण करने की चेष्टा करता है और अतिमानव स्वभाव मे प्रतिष्ठित होता है।

—अज्ञात

× × × ×

जैसे लोहे से उत्पन्न मोर्चा लोहे को ही खा जाता है वैसे ही अत्यन्त चचल चित्त वाले मनुष्य के कर्म ही उसे दुर्गति की ओर ले जाते है।

—बुद्ध वाणी

× × × ×

जो झूठ बोलने के पहले और पीछे तथा झूठ बोलते समय दुखी होता है अदत्त ग्रहण करते हुए भी वह धन में सन्तोष नहीं पाता हुआ सदैव दु खी रहता है उसका कोई सहायक नहीं होता।

—जिन वाणी

× × × ×

मार्ग में पड़ी हुई हड्डी को देख कर मनुष्य उससे छू जाने के डर से बच कर चलता है परन्तु हजारों हड्डियों से भरे हुए अपने शरीर को नहीं देखता।

शंकराचार्य

× × × ×

दुनिया एक दर्पण है। तुम हँसोगे तो वह भी हँसेगी। तुम्हारे रोने पर वह भी रोवेगी। इस लिये तुम दुनिया को जैसा देखना चाहते हो वैसे ही स्वय बनो।

—प्रसाद

× ∠ × ×

वाणी से किसी को चोट न पहुँचाना किसी की हिंसा न करना आचार नियमों का पालन करना भोजन में हिसाब रखना योग द्वारा चित्त को ठीक मार्ग पर लगाना यही बुद्ध का उपदेश है।

—बुद्ध वाणी

× × × ×

सेवा धर्म का पालन किए बिना मैं अहिंसा-धर्म का पालन नहीं कर सकता और अहिंसा धर्म का पालन किए बिना मैं सत्य की खोज नहीं कर सकता और सत्य के बिना धर्म नहीं। सत्य ही राम है, नारायण है, ईश्वर है, खुदा है, अल्लाह है और गाड है।

—महात्मा गांधी

× × × ×

छोटे-बड़े किसी भी प्राणी की हिंसा न करे, अदत्त (बिना दी हुई वस्तु) न ले, विश्वासघाती असत्य, न बोले-यह आत्म निग्रही सत्पुरुषों का धर्म है।

— महावीर वाणी

× × × ×

जो शरीर से असंयमी है, जो मिथ्या सिद्धांतों पर विश्वास करता है, जो आलसी है उसे दुष्ट प्रवृत्तियां शीघ्र अपने अधीन कर लेती है।

—बुद्ध वाणी

× × × ×

ईर्ष्या करने वाला, घृणा करने वाला, सदा असन्तुष्ट रहने वाला, सदा कोप रहने वाला, वहम मे डूबा रहने वाला और दूसरो के भाग्य-भरोसे जीने वाला-येछह सदा दुःख भोगते है।

—अज्ञात

अपना दोष कोई नहीं देख पाता अपना व्यवहार सर्व को अच्छा मालूम देता है। लेकिन जो हर हालत में अपने को छोटा समझता है वह अपना दोष भी देख सकता है।

—अबू उस्मान

× × × ×

जो रात और दिन एक बार अतीत की ओर चले जाते हैं वे फिर कभी वापस नहीं आते जो मनुष्य अधर्म (पाप) करता है उसके वे रात दिन बिल्कुल निष्फल जाते हैं। जो मनुष्य धर्म करता है, उसके वे रात और दिन सफल हो जाते हैं।

—जिन वाणी

× × × ×

✓ लोगों का महज उनके धन के कारण आदर न करो बल्कि उनकी उदारता के कारण हम सूरज की कदर उस की ऊँचाई के कारण नहीं करते बल्कि उस की उपयोगिता के कारण।

—शेली

× × × ×

धन अनर्थ कारक है ऐसी निरन्तर भावना कर। सच सुख उस में सुख का लेश भी नहीं है। धनवान को पुत्र तक से डरना पड़ता है यह रीति सर्वत्र जानी हुई है।

—शंकर

दुनिया मे सबसे वाहियात खाम ख्याली यह है कि पैसा आदमी को सुखी बना सकता है। मुझे अपने धन मे तब तक कोई तृप्ति नही मिली जब तक मैंने उससे नेक काम करने शुरु न कर दिये।

—फ़ट

× × × ×

भय और वैर से निवृत्त साधक, जीवन के प्रति मोह-ममता रखने वाले सब प्राणियो को सर्वत्र अपनी ही आत्मा के समान जान कर उन की कभी हिंसा न करे।

—महावीर वाणी

× × × ×

उस आदमी की जिन्दगी हैवान की जिन्दगी है जिस ने धर्म, धन और सुख प्राप्त नही किया, लेकिन इन तीनो मे भी धर्म प्रमुख है, क्योकि धर्म के बिना न धन सम्भव है न सुख।

—अज्ञात

× × × ×

अत्यधिक सुन्दरता के कारण सीता हरी गई, अधिक गर्व से रावण मारा गया, बहुत दान देकर बलि को बंधना पडा। इस कारण अति को सभी स्थलो मे छोड देना चाहिए।

—नीतिवान् चाणक्य

जब तक मनुष्य अपनी गिनती पृथ्वी के सारे जीवों के अन्त में नहीं करेगा उसे मोक्ष नहीं मिलेगा। नम्रता की चरम सीमा का नाम ही तो अहिंसा है।

—गांधी

× × × ×

ज्ञानी होने का सार ही यह है कि वह किसी भी प्राणी की हिंसा न करे। मात्र इतना ही अहिंसा के सिद्धान्त का ज्ञान यथेष्ट है। और यही अहिंसा का विज्ञान है।

—जिन वाणी

× × × ×

उदार पुरुषों को धन तिनके के समान है और शूरमा को मरना तुच्छ प्रतीत होता है विरक्त को स्त्री तृण के सदृश है और वासना रहित को सारा संसार तुच्छ है।

—प्रभात

× × × ×

नीच की नम्रता अत्यन्त दुखदायी है। अंकुश धनुष साँप और बिल्ली झुक कर ही मारते हैं। दुष्ट की प्रिय वाणी ऐसी भयदायक है जैसे अऋतु के फूल।

—रामायण

× × × ×

न तुम्हारी दौलत तुम्हें अल्लाह के नजदीक ला सकती

, और न तुम्हारे वाल-वच्चे। अल्लाह के नजदीक वही
ा सकता है जो वात मान ले और नेक काम करे।

—कुरान

× × × ×

दुनिया क्या कहेगी, ऐसे दुर्वल विचार ले कर हम
ससार मे उस वस्तु को नही पा सकते जिस के पीछे दिन
रात दौडे फिरते हैं। सत्य को पाने के लिए दुनिया की
चिन्ता विना किए ही आगे वढना होगा।

—विवेकानन्द

× × × ×

सम्यक् वोध को जिस ने प्राप्त कर लिया वह वुद्धिमान्
मनुष्य हिंसा से उत्पन्न होने वाले वैर-वर्धक एव महा भयकर
दु खो को जान कर अपने को पाप कर्म से वचाये।

- महावीर वाणी

× × × ×

व्रह्मचर्य-पालन है तो मुश्किल मगर मुश्किलो को जीतने
के लिये ही तो हम पैदा हुए हैं। आरोग्य प्राप्त करना हो तो
इस मुश्किल को जीतना ही होगा।

—गाधी

× × × ×

✓ जितना भाग्य में लिखा है उतना हर जगह बिना उद्योग और परिश्रम के भी मिल जाय गा और जो भाग्य म नही लिखा है वह कुबेर की खुशामद और चाकरी मे भी नही मिलेगा।

—प्रभात

× × × ×

सम्पट लोग मदिरों म उपदेश सुनने जाते है मगर उन की आँखें उपस्थित स्त्रियो पर लगी रहती है। और जो चोरी करने के इरादे से आते है वे तुम्हारे जूते चुरा कर चल देते है।

—समर्थ राम दास

× × × ×

✓ जो आदमी दूसर के गुप्त भेद का तुझ पर प्रकट करदे जहा तक बने उसे अपना भेद न दे क्योकि जो कुछ वह दूसरे के भेद के साथ कर रहा है वही तेरे भेद के साथ भी करेगा।

—हजरत अली

× × × ×

ससार म प्रत्येक प्राणी के प्रति—फिर भले ही वह शत्रु हो या मित्र—सम भाव रखना तथा जीवन-पर्यन्त छोटी

मोटी सभी प्रकार की हिंसा का त्याग करनावास्तव मे बडा ही दुष्कर है।

—जिन वाणी

× × × ×

जिस को श्रेष्ठाचार प्यारा है, इन्द्रियो को निग्रह करने मे स्थित है, सुख दुख जिन को तुल्य है, सत्य मे नित्य चलते है इत्यादि सम्पूर्ण धर्म धन वा यश के वास्ते नही किन्तु अपने कर्तव्य जानते है वही सज्जन कहाते है।

—अज्ञात

× × × ×

हम ने भोग नही भोगे, भोगो ने ही हमे भोग लिया, हम ने तप नही किया, हम ही तप गये, हमने काल नही गुजारा, काल ने ही हमे खत्म कर दिया, हमारी तृष्णा जीर्ण नही हुई, हम ही जीर्ण हो गये।

—भर्तृ हरि

× × × ×

एक वार हलका आहार करने वाला महात्मा है, दो वार सभल कर खाने वाला बुद्धिमान है और इस से अधिक वे अटकल खाने वाला मूर्ख और पशु समान है।

—धम्म पद

× × × ×

अपने मन को बुरी बातों से बचा और उसे ऐसी बातों के लिये उत्तेजित कर जिन से उस की शोभा बढ़े। ऐसी दशा में तेरा जीवन आनन्दमय होगा और लोग तेरी प्रशंसा करेंगे।

—हजरत अली

× × × ×

ब्रह्मचर्य से स्मृति स्थिर और सग्राहक बनती है। बुद्धि तेजस्विनी और फलवती बनती है सङ्कल्प-शक्ति बलवती बनती है और उस के चरित्र में ऐसा रणकार आ जाता है जो स्वेच्छाचारी के स्वप्न में भी नहीं आ सकता।

—गांधी

× × × ×

अपने स्वार्थ के लिए अथवा दूसरों के लिए, क्रोध से अथवा भय से किसी भी प्रसंग पर दूसरों को पीड़ा पहुँचाने वाला असत्य वचन न तो स्वयं बोले न दूसरों से बुलवाये।

—महावीर स्वामी

× × × ×

किसी भी आधि-व्याधि-उपाधि की ज्वाला से झुलसे जाने के बाद पश्चाताप या रंज करना जले पर नमक लगाना है। उस को शान्त करने के लिए तो हिम्मत बांध कर उस

का उपाय ढूढना चाहिए और शान्ति रूपी जल का प्रयोग करना चाहिए।

—अज्ञात

✓ × × × ×

शत्रु को हानि पहुँचा कर आप उस से नीचे हो जाते हैं, बदला लेकर बराबर हो जाते हैं पर उसे क्षमा कर के उससे ऊचे हो जाते हैं।

—महात्मा बुद्ध

× × × ×

महान कुल मे जन्म लेने से तप नहीं हो जाता, असली तप वह है जिसे दूसरा कोई नही जानता तथा जो कीर्ति की इच्छा से नही किया जाता।

—भगवान महावीर

✓ × × × ×

जो विद्वान हो कर भी सयमी नही है वह अधे मिसालची की तरह है, जो दूसरो को तो रास्ता दिखाता है परन्तु स्वय नही देख पाता।

—महात्मा शेख सादी

✓ × × × ×

मनुष्य का गौरव इस मे है कि वह अपने छोटो के

साथ प्रेम और सम्यता का बर्ताव करे और अपने से बड़े के लिए आज्ञापालन और मौन का भाव स हो।

—लाला लाजपत राय

× × × ×

✓ मनुष्य देवताओं के सामने हार नहीं मानता और न वह मौत के सामने ही सिर झुकाता है। जब वह हार मानता है तो अपनी इच्छा शक्ति की कमजोरी की वजह से ही मानता है।

—प० जवाहर लाल नेहरू

× × × ×

भले या बुरे जैसे भी वातावरण म हम रहेंगे उसका असर हम पर अवश्य होगा। इस लिये उत्तम पुरुष बनने के अभिलाषी पुरुषों को हमेशा सत्य मार्ग में ही रहना चाहिए।

—प्रताप

× × × ×

भाषा के गुण तथा दोषों को भली भाँति जान कर दूषित भाषा को सदा के लिए छोड़ देने वाला षट् काय जीवों पर सयत रहने वाला तथा साधुत्व-पालन में सदा

तत्पर बुद्धिमान साधक एक मात्र हितकारी मधुर भाषा वोले।

—जिन वाणी

× × × ×

जमीन पर सोना पडे या पलग पर सोना मिल जाय, शाक भाजी खानी पड़े या स्वादिष्ट भोजन मिल जाय, फटा पुराना कपडा मिले या दिव्य वस्त्र मिले, मनस्वी लोग कार्य सफल करने के लिये न दु ख को गिनते है न सुख को।

—नीति

× × × ×

अपनी प्रशसा मे जब तक रुचि है तब तक अपनी निन्दा से भी उद्वेग हुए विना न रहेगा। अपनी सफलता मे जब तक रुचि है तब तक असफलता दुखदायी हुए विना न रहेगी।

—हरि भाऊ उपाध्याय

× × × ×

जो अपनी सच्ची हालत का विचार किए विना ही राग रग मे मस्त हो रहे है, यदि वे सब अपनी असली हालत को पहचान जायँ तो फिर एक पल भी वे यो व्यर्थ न जाने दें।

—हुसैन बसराई

× × × ×

जो मनुष्य भूल से भी मुसत असत्य किन्तु ऊपर से सत्य मालूम होने वाली भाषा बोल उठता है और वह भी पाप से अछूता नही रहता तब भला जो जान बूझ कर असत्य बोलता है उसके पाप का तो कहना ही क्या ?

—महावीर वाणी

× × × ×

विपद् काल में धैर्य एश्वर्य में क्षमा सभा में वचन चातुरी सग्राम में पराक्रम सुकश में अभिरुची और शास्त्र में व्यसन-ये गुण महा पुरुषों में स्वभाव से ही होते है ।

—भर्तृहरि

× × × ×

मनुष्य स्वभाव अपने विकसित रुप में साजिमो तौ से मानवता पूर्ण है प्रेम के बिना मानवता हीन है समझदारी बिना मानवता हीन अनुशासन विना मानवता हीन ।

—रस्किन

× × × ×

कोई मनुष्य भले ही इतना लम्बा हो कि आकाश छू या सृष्टि को मुट्ठी में ले ले लेकिन उसका माप आत्मा और हृदय से ही होना चाहिये ।

—वसू

आदमी धर्म के लिए झगडेगा, उसके लिए मरेगा, उसके लिए लिखेगा, सब कुछ करेगा पर उसके लिए जिएगा नही।

—जवाहर लाल नेहरू

× × × ×

देवताओ-सहित समस्त ससार के दु ख का मूल एक मात्र काम-भोगो की वासना ही है। जो साधक इस सम्बन्ध मे वीत राग हो जाता है, वह शारीरिक तथा मानसिक सभी प्रकार के दु खो से छुट जाता है।

—जिन वाणी

× × × ×

जो सामने तो मीठी मीठी बातें करता है लेकिन पीठ पीछे बुरा सोचता है और दिल मे कुटिलता रखता है, जिस का चित सांप की गति के समान है ऐसे कुमित्र को छोड़ने में ही भलाई है।

—रामायण

× × × ×

इस दुनिया मे कोई ऐसा नही है जिस से भलाई की आशा रक्खी जाय, और न कोई मित्र ही ऐसा है जो उस समय मे साथ दे जब कि काल चक्र धोखा दे बैठता है।

—एक कवि

× × × ×

—अनासक्ति कैसे बढ़े ? सुख और दुःख, दोस्त और दुश्मन हमारा और दूसरों का—सब समान समझने से अनासक्ति बढ़ती है। इस लिये अनासक्ति का दूसरा नाम समभाव है।

—गांधी

× × × ×

जिन लोगों के दिलों से मोह, गुस्सा और डर बिल्कुल जाते रहे जिन्हों ने एक परमेश्वर का सहारा लिया और उसी में अपना मन लगाया उन्हें सच्चा ज्ञान मिलता है और आखिर में वे उसी परमेश्वर में मय (फ़ना) हो जाते हैं।

—गीता

× × × ×

ज्ञानी पुरुष संयम-साधक उपकरणों के लेने और रखने में कहीं भी किसी भी प्रकार ममत्व नहीं करते। और तो क्या अपने शरीर तक पर भी ममता नहीं रखते।

—महावीर वाणी

✓ जो अपने अमृत मय उपदेश से दुष्ट को सन्मार्ग पर लाना चाहता है वह सिरस के नाजुक फूल की पंखड़ी से हीरे को छेदना चाहता है या एक बूंद शहद से खारे समुन्द्र को मीठा करना चाहता है।

—भर्तृहरि

जो मनुष्य पढा-लिखा न होने पर भी घमडी हो, दरिद्री होकर ऊची ऊची कामनाओ के भोगने की इच्छा करे और बुरे कामो से धन पैदा करना चाहे, वह मूर्ख है।

—महा भारत

कडी मेहनत से तन्दुरूस्ती नही बिगडती पर घबराहट, झझट चिन्ता, असन्तोष से उस की बहुत हानि होती है और निराशा तो आदमी को तोड ही डालती है।

—आवर बरी

× × × ×

गृहस्थ का धर्म है कि घर पर शत्रु भी आवे तो उसका आदर-सत्कार करे, जैसे पेड अपने काटने वाले को भी छाया देता है। अतिथी-सत्कार मे चूकने वाला पतित होता है।

—मनू

× × × ×

जहाँ कौवे कोलाहल कर रहे हो वहाँ कोयल का कूजन क्या शोभा दे ? जहाँ खलजन परस्पर वाद-विवाद कर रहे हो वहाँ सज्जन के मौन रहने मे ही सार है।

—अज्ञात

× × × ×

अपनी आत्मा के साथ युद्ध करना चाहिये। बाहरी

शत्रुओं से युद्ध करने से क्या लाभ ? आत्मा के द्वारा ही आत्मा को जीतने वाला पूर्ण सुखी होता है।

—भ महावीर

× × × ×

लक्ष्मी ऐसे पुरुष को स्वयं ढूंढ़ती हुई आती है जो उत्साही और अप्रमादी हो क्रिया विधि जानता हो व्यसन रहित हो शूर तथा कृतज्ञ हो और जिस की मैत्री स्थिर हो

—नीति

× × × ×

जिस तरह वृक्ष काट दिये जाने पर भी अगर उस की जड़ें सुरक्षित और मजबूत हों फिर उगने लगता है उसी तरह जब तक लोभ को जड़ से नहीं उखाड़ फेंका जाता दुःख बार बार आते रहते हैं।

—धम्म

× × × ×

धर्म का मूल विनय है उस का परम रस-फल मोक्ष है विनय के द्वारा ही मनुष्य बड़ी जल्दी शास्त्र ज्ञान तथा कीर्ति सम्पादन करता है और अन्त में निःश्रेयस मोक्ष भी उसके द्वारा प्राप्त होता है।

—भ महावीर

× × ⊤ ×

बुद्धिमान को चाहिये कि किसी काम को करने से पहिले उस के नतीजे पर विचार करले। जल्द बाजी मे किये गये काम का नतीजा मरते वकत तक हृदय को तीर की तरह छेदता रहता है।

—अज्ञात

× × × ×

अहिंसा और कायरता परस्पर विरोधी शब्द हैं। अहिंसा सर्व श्रेष्ठ सद्गुण है, कायरता बुरी से-बुरी बुराई है। अहिंसा का मूल प्रेम मे है, कायरता का घृणा मे। अहिंसक सदा कष्ट-सहिष्णु होता है, कायर सदा पीड़ा पहुँचाता है। समपूर्ण अहिंसा उच्चतम वीरता है।

—गाधी

× × × ×

अगर कोई आदमी वहुत से बच्चे पैदा करे और उनका पालन-पोषण करे, इस मे उस की कोई तारीफ नही है, इस मे सच्चा पराक्रम नही है, क्योंकि कुत्तियाँ और बिलिय भी बच्चे पैदा करती और उन की परवरिश करती है। सच्ची वीरता अपना धर्म पालन करने मे है, ऐसी वीरता अर्जुन ने दिखाई थी।

—राम कृष्ण परम हंस

× × × ×

जो स्त्री मरने के लिये तैयार है उसे कौन दुष्ट एक शब्द भी बोल सकता है। उस की आँखों में इतना ही तेज होगा कि सामने खड़ा हुआ व्यभिचारी पुरुष जहाँ का तहाँ डर हो जायेगा।

—गांधी

× × × ×

जो शिष्य अभिमान क्रोध मद या प्रमाद के कारण गुरु की विनय (भक्ति) नहीं करता वह इससे अभूति अर्थात पतन को प्राप्त होता है। जसे बाँस का फल उस के ही नाश के लिए होता है उसी प्रकार अविनीत का ज्ञान-बल भी उसी का सर्व-नाश करता है।

—महावीर स्वामी

× × × ×

योगी जन शिव को आत्मा में देखते हैं मूर्ति में नहीं। जो आत्मा में रहने वाले शिव को छोड़ कर बाहर के शिव को पूजते हैं। वे हाथ में रखे हुए लड्डू को छोड़ कर अपनी कोहनी को काटते हैं।

—शंकराचार्य

× × × ×

सच्चा भोजन वह है जो बच्चा को और बड़ों को खिला कर खाया जाय। सच्चा प्रेम वह है जो गैरों के प्रति भी

दर्शाया जाय। सच्चा ज्ञान वह है जो पाप नही करता। सच्चा धर्म वह है जो दम्भ नही करता।

—अज्ञात

× × × ×

सत्य और प्रेम-दुनिया की सब से अधिक शक्ति शाली चीजो में से हैं, और जब ये दोनो साथ हो तो उनका आसानी से मुकाबला नही किया जा सकता।

—फडवर्थ

× × × ×

ससार की मोह-माया मे फँसी हुई मूर्ख प्रजा अनेक प्रकार के पाप कर्म करके अनेक गोत्रो वाली जातियो मे जन्म लेती है। सारा विश्व इन जातियो से भरा हुआ है।

—जिन वाणी

× × × ×

जिन का चेहरा आनन्द से खिला हुआ है, जिन का हृदय दया से भरा हुआ है, जिन की वाणी अमृत की तरह वहती है और जिनके कार्य परोपकार के लिये होते है, ऐसो का कौन सत्कार न करेगा ?

—अज्ञात

× × × ×

अपने विचारो का द्रोही न बन, अपने प्रति ईमानदार रह, अपने विचारो पर अमल कर, तू जरूर कामयाव

होगा। सच्चे और सरल हृदय से प्रार्थना कर। तेरी प्रार्थनायें जरूर सुनी जायेगी।

—राम कृष्ण परम हंस

× × × ×

गरम लोहे पर पड़ने से जल की बूंद का नाम भी नहीं रहता वही कमल के पत्त पर पड़ने से मोती-सी हो जाती है और वही स्वाति नक्षत्र में सीप मा पड़ने से मोती हो जाती है। अधम मध्यम और उत्तम गुण प्राय: संसर्ग से ही होते हैं।

—भर्तृहरि

जो मनुष्य निष्कपट एवं सरल होता है उसी की आत्मा शुद्ध होती है। और जिस की आत्मा शुद्ध होती है उसी के पास धर्म ठहर सकता है। घी से सींची हुई अग्नि जिस प्रकार पूर्ण इसी प्रकार सरल और शुद्ध साधक ही पूर्ण निर्वाण को प्राप्त होता है।

—महावीर स्वामी

× × × ×

साधु जीवन से ही आत्मा-शान्ति की प्राप्ति सम्भव है। यही इस लोक और परलोक, दोनों का साधन है। साधु-जीवन का अर्थ है सत्य और अहिंसा मय जीवन संयम पूर्ण

वन। भोग कभी धर्म नही बना सकता, धर्म की जड तो
ाग मे ही है।

—गांधी

× × × ×

लाभ हानि का बहुत विचार करने वाला मनुष्य हानि
 बच सकता है। अधिक प्राप्त कर लेगा, ऐसा नही कह
कते। इससे विपरीतसाहसी मनुष्य बडा लाभ कर सकता
है। 'साहसे श्री वसित'।

—अज्ञात

× × × ×

जो अशुद्ध दर्शन से नेत्रो को और लोगो से इन्द्रियो को
बचाता है, नित्य ध्यान योग से अन्त करण को निर्मल और
चरित्र को शुद्ध रखता है, और धर्म पूर्वक अर्जित अन्न से
अपना पालन करता है, उसके ज्ञान मे कोई कमी नही।

—शाह शुजा

× × × ×

जो मनुष्य अनेक पाप-कर्म कर, वैर-विरोध बडा कर,
अमृत की तरह धन का सग्रह करते हैं, वे अन्त मे कर्मों के
दृड पाश मे बधे हुए सारी धन–सम्पति यही छोड कर नरक
को प्राप्त होते हैं।

—जिन वाणी

× × × ×

सब को अपनी तरह समझना और सब के अन्दर एक ईश्वर के दर्शन करना यही ज्ञान की आखिरी हद है। इस ज्ञान से बढ़ कर आदमी को पाक करने वाली दूसरी चीज इस दुनियां में नहीं है। इसके लिये महज श्रद्धा की और अपनी इन्द्रियों को काबू में रखने की जरूरत है।

—गीता

× × × ×

ज्ञान की बातें सुन कर जो उन पर अमल करता है उसी के अन्तःकरण में ज्ञान–ज्योति प्रकट होती है। जो सुन कर भी उन पर अमल नहीं करता उसका ज्ञान तो बातों ही में रहता है।

—मनु कबाल

× × × ×

कोई धन हीन मनुष्य को अधम समझता है कोई गुण हीन मनुष्य को अधम मानता है लेकिन तमाम वेद पुराणों का जानने वाले व्यास ऋषि नारायण–स्मरण हीन मनुष्य को अधम कहते हैं।

—पद्मपुराण

× × ×

कोई जन्म जिसे अधिकार दे दिया गया है। मगर वह सत्य–प्रेम और सेवा भाव से सर शार नहीं है उसका

दुरुपयोग ही करेगा, ख्वाह वह राज कुमार हो, या जनता में से कोई।

—फौन्टेन

× × × ×

ससारी मनुष्य अपने प्रिय कुटुम्बियो के लिए बुरे-से बुरे पाप-कर्म भी कर डालता है, पर जब उनके दुष्फल भोगने का समय आता है, तब अकेला ही दु ख भोगना है, कोई भी भाई बन्धु उसका दु ख बँटाने वाला और सहायता पहुँचाने वाला नही होता।

—महावीर वाणी

× × × ×

जो मनुष्य जितना अन्तर्मुख होगा, उतनी ही उस की वृत्ति सात्त्विक और निमल होगी, उतनी ही दूर की वह सोच सकेगा, और उतने ही दूर के वह परिणाम देख सकेगा।

—अज्ञात

× × × ×

कल का काम आज ही कर लेना और शाम का काम सुवह ही कर लेना, क्योकि मौत यह देखने के लिये नही खडी रहेगी कि इस आदमी ने अपना काम पूरा कर लिया या नही।

आपर्श आत्यन्तिक अपरिग्रह तो उसी का होगा, जो मन से और कर्म से दिगम्बर है मतलब। वह पक्षी की भाँति बिना घर के बिना वस्त्रों के और बिना अन्न के विचरण करेगा।

—गांधी

× × × ×

साधु—प्रज्ञ पण्डित—पुरुषों को मोह—निद्रा में सोते रहने वाले संसारी मनुष्यों के बीच रह कर भी सब ओर से जागरुक रहना चाहिए—किसी का विश्वास नहीं करना चाहिऐ। काल निर्दय है और शरीर निबल यह जान कर भारण्ड पक्षी की तरह हमेशा अप्रमत्त भाव से विचरना चाहिए।

—जिन वाणी

× × × ×

जो विवेक के नियमों को तो सीख लेता है परन्तु जीवन में उन्हें नहीं उतारता वह ऐसे आदमी की तरह है जिसने अपने खेतों में मेहनत की मगर बीज नहीं डाला।

—शादी

× × × ×

अमीरी दिल से है धन से नहीं बड़पन अक्ल से है उम्र से नहीं। अत्याचारी पुरुष शासन नहीं कर सकता भेड़िया भेड़ों की रक्षा नहीं कर सकता। अपनी प्रजा से

सन्धि करो और शत्रु की शत्रुता से निश्चत रहो क्योकि न्यायप्रिय राजा के लिये प्रजा ही फौज है।

—अज्ञात

× × × ×

बिना विचारे उतावली मे कोई काम कभी न करना चाहिये। अविचार सब आपत्तियो का मूल है। विचार पूर्वक कार्य करने वाले की मनोवाछित कामनाएँ स्वय पूर्ण हो जाती हैं।

—भारवि

× × × ×

कौवे मे पवित्रता, जुआरी मे सत्य, सर्प मे सहन शीलता, स्त्री मे काम शान्ति, नामर्द मे धीरज, शराबी मे तत्त्व चिन्ता और राजा मे मैत्री किसने देखी या सुनी है।

पच तत्र

× × × ×

ससार मे जो कुछ धन जन आदि पदार्थ हैं, उन सब को पाश रूप जान कर मुमक्षु वडी सावधानी से फूक–फूक कर पांव रखे। जब तक शरीर सशक्त है, तब तक उसका उपयोग अधिक से अधिक सयम–धर्म की साधना के लिए कर लेना चाहिए। बाद मे जब वह बिल्कुल ही अशक्त हो जावे, तब

बिना किसी मोह ममता के मिट्टी के ढेले के समान उस त्याग कर देना चाहिए।

—महावीर वाणी

× × × ×

अहिंसा धर्म का तकाजा है कि हम दूसरों को अधिक से अधिक सुविधाएँ प्राप्त करा देने के लिये स्वयं अधिक से अधिक असुविधाएँ सहें—यहाँ तक कि अपनी जान भी जोखम में डाल दें।

—गांधी

× × × ×

जैसे हिंसा की तालीम में मारना सीखना जरुरी है उसी तरह अहिंसा की तालीम में मरना सीखना पड़ता है। हिंसा में भय से मुक्ति नहीं मिलती, किन्तु भय से बचने का इलाज ढूंढने का प्रयत्न रहता है। अहिंसा में भय को स्थान ही नहीं है।

—गांधी

× × × ×

दुःख से बचने के लिये 'अज्ञान' की दलील बेकार है। कोई अज्ञानी अगर बिजली के तार को छुएगा तो मरेगा ही। आत्मा को भी क्रोध लोभ मोह वश रह करने से जन्म—जरा—मरण के दुःख भोगने ही पड़ते हैं।

—अज्ञात

कोई भी शुभ कार्य करते समय तुम निष्कपट हो न ? जो कुछ बोल रहे हो निस्वार्थ भाव से ही न ? जो दान—उपकार कर रहे हो कृपणता छोड कर हो न ?

—हातिम हाराम

× × × ×

राग और द्वेष—दोनो कर्म के बीज है। अत कर्म का उत्पादक मोह ही माना गया है। कर्म—सिद्धान्त के अनुभवी लोग कहते है कि ससार मे जन्म—मरण का मूल कर्म है, और जन्म—मरण—यही एक मात्र दु ख है।

—जिन वाणी

× × × ×

शिक्षा को आजीविका का साधन समझ कर पढना नीच-वृत्ति कहा जाता है, आजीविका साधन तो शरीर है। पाठशाला तो चरित्र गठन का स्थान है। विद्यार्थियो को यह पहले से ही जान लेना जरुरी है कि हमे अपनी आजीविका को बाहू बल से ही प्राप्त करना है।

—गाधी

× × ×

वही आदमी भला करेगा जिसने अपने आपे को पाक साफ किया, और वह आदमी अपना भला नही कर सकता जिसने अपने आपे को नीचे गिराया यानी अपने को नापाक किया।

—कुरान

एक क्षण या पलभर की आयु भी करोड़ों अशर्फियों के बदले में कभी नहीं मिल सकती। यदि ऐसी आयु यों ही बिना धर्म के बरबाद हो गई तो इससे बढ़ कर हानि और क्या होगी ?

—शंकराचार्य

× × × ×

शुद्ध कर्म करने वाला मनुष्य घंटे भर जिए तो अच्छा है, मगर इस लोक और परलोक को बिगाड़ने वाला काम करने वाला लाख बरस जिए तो खराब।

—कुरान

× × × ×

जिस तरह जैसे ओस की बूंद कुशा की नोक पर थोड़ी देर तक ही ठहरी रहती है उसी तरह मनुष्यों का जीवन भी बहुत अल्प है—शीघ्र ही नष्ट हो जाने वाला है। इस लिए हे गौतम ! क्षण-मात्र भी प्रमाद न कर।

—महावीर वाणी

× × × ×

पानी में अगर सिवार हो तो मनुष्य उस में अपना प्रतिबिम्ब नहीं देख सकता। इसी प्रकार जिस का चित्त आलस्य से पूर्ण होता है वह अपना ही हित नहीं समझ सकता दूसरों का हित कैसे समझेगा ?

—बुद्ध

हम पशुओ की सतह पर न उत्तर आये जिन का कि प्रदान आनन्द खाने और पीने मे हैं। हमारे अन्दर एक अमर आत्मा है जो परम कल्याण के सिवाय किसी से तृप्त नही होती।

—स्टर्म

× × × ×

दुनिया मे इज्जत के साथ जीने का सबसे छोटा और सब से शर्तिया उपाय यह है कि हम जो कुछ बाहर से दिखना चाहते हैं वैसे ही वास्तव मे हो भी।

—सुकरात

× × × ×

अगर मोमिन (ईमान वाला) होना चाहता है तो अपने पडोसी का भला कर और अगर मुसलिम होना चाहता है तो जो कुछ अपने लिये अच्छा समझता है वही सबके लिये अच्छा समझ।

—मुहम्मद

× × × ×

जब तक कोई शख्स 'अल्लाह हो! अल्लाह हो! हे भगवन! हे भगवन! चिल्लाता है निश्चय जानो उसे ईश्वर नही मिला, जो उसे पा लेता है चुप शान्त हो जाता है।

—राम कृष्ण परम हंस

× × × ×

जो मूर्ख मनुष्य सुन्दर रूप के प्रति तीव्र आसक्ति रखता है वह अकाल में ही नष्ट हो जाता है। रागातुर व्यक्ति रूप-दर्शन की लालसा में वैसे ही मृत्यु को प्राप्त होता है जैसे दीप की ज्योति देखने की लालसा में पतंग।

—जिन वाणी

× × × ×

जिसके चित में तरंगे उठती ही रहती है वह सत्य के दर्शन कैसे कर सकता है। चित्त में तरंगो का उठना समुद्र के तूफान जैसा है। तूफ़ान में जो तूफ़ान पर काबू रख सकता है वह सलामत रहता है। ऐसे ही चित्त की अशांति में जो राम नाम का आश्रय लेता है वह जीत जाता है।

—महात्मा गांधी

× × × ×

न तो शास्त्र और न गुरु ही तुम्हें परमेश्वर के दर्शन करा सकते है। मनुष्य स्वयं ही शुद्ध बुद्धि से अपनी आत्मा में परमात्मा को देखता है।

—अज्ञात

× × × ×

जब तक इच्छा का लवलेश भी विद्यमान है ईश्वर का दर्शन नही हो सकता इस लिये अपनी छोटी छोटी इच्छाओं

को पूरी कर ले, सम्यक विचार और विवेक द्वारा वडी वडी इच्छाओ का त्याग कर दे।

—राम कृष्ण परम हम

× × × ×

वुरा काम करना पाप वर्त्ती है, विना खतरा उठाये अच्छा काम करना, साधारन बात है, लेकिन उत्कृष्ट मनुष्य दूसरो की भलाई के लिए अपने जीवन का वलिदान करने को त्यार रहते हैं।

—पलूटार्ड

× × × ×

कारूँ वादशाह को हज़रत मूसा ने उपदेश किया कि भलाई वैसी ही गुप्त रीति से कर जैसे मालिक ने तेरे साथ की है। उदारता वही है जिस मे निहोरे का मेल न हो तभी उस का फल मिलता है। सच्चे उपकार के पेड की डालिया आकाश के परे पहुँचती हैं।

—सादी

× × × ×

क्रोध प्रीति का नाश करता है, मान विनय का नाश करता है, माया मित्रता का नाश करती है, और लोभ सभी सद् गुणो का नाश कर देता है। शान्ति से क्रोध को

मारें नम्रता से अभिमान को जीतें सरलता से माया का नाश करें और सन्तोष से लोभ को काबू में लायें।

—महावीर स्वामी

× × × ×

अगर तू स्वस्थ शरीर चाहता है तो उपवास और टहलने का प्रयोग कर अगर स्वस्थ आत्मा तो उपवास और प्रार्थना का—टहलने से शरीर को व्यायाम मिलता है उपवास दोनों को शुद्ध करता है।

—स्वार्ट

× × × ×

जिसने अपने मन और इन्द्रियों को अपने वश में नहीं किया उसकी उपासना ऐसी समझनी चाहिये जैसे हाथी का नहाना कि इधर तो नहाया उधर शरीर पर धूल डाल कर फिर ज्यों का त्यों हो गया।

—हितोपदेश

× × × ×

झूठ कपट चोरी व्यभिचार आदि दुराचारों की वृत्तियो के नष्ट हुए बिना चित्त का एकाग्र हुए बिना ध्यान और समाधि भी कठिन है।

—मनु

× × × ×

हृदय के कठोर मनुष्य को उत्तम से उत्तम त्यागी का

उपदेश भी असर न करे तो इस मे उपदेश देने वाले का या उस उपदेश का दोप नही, मनुष्य की कमनसीवी का ही अपराध है।

—अज्ञात

× × × ×

सुवेष को देख कर मूर्ख ही भुलावे में आ जाते है, चतुर लोग नही। मोर देखने मे सुन्दर लगता है, अमृत सारीखी वोली वोलता है मगर उस का आहार सांप है।

—रामायण

× × × ×

चाँदी और सोने के कैलास के समान विशाल असख्य पर्वत भी यदि पास मे हो, तो भी लोभी मनुष्य की तृप्ति के लिए वे कुछ भी नही। कारण कि तृष्णा आकाश के समान अनन्त है।

—जिन वाणी

× × × ×

किसी अडचन से हताश न होकर, आत्म विश्वास न खोकर, अखण्ड कार्यरत रहना ही तुम्हारा कर्त्तव्य है, अगर यह किया तो इस के सुन्दर फल दिन दिन वढते हुए प्रमाण मे तुम्हारी नज़र पडेंगे।

—विवेकानन्द

× × × ×

कला में मुझे रस तो मालूम होता है किन्तु ऐसे कितने ही रसों का मैंने त्याग किया है—मुझे करना पड़ा है। सत्य की खोज में जो रस मिले उन्हें मैंने छक कर पिया और मिलें तो पीने के लिये तैयार हूँ।

—गांधी

× × × ×

तीक्ष्ण काँटा तुम्हारे अन्दर चुभा हुआ है और उस से तुम पीड़ित हो रहे हो आश्चर्य है कि इस दुःख-पीड़ा में भी तुम्हें नींद आ रही है। प्रज्ञा और अप्रमाद के द्वारा यह काँटा निकाल लो ना ?

—बुद्ध

× × × ×

बुरा काम करना नीचता है। बिन खतरा मोल लिये अच्छा काम करना मामूली बात है। मगर महान् और शरीफ़ाना काम करना सज्जन का ही भाग है। ख्वाह, उसके करने में उसे सब कुछ खतरे में डाल देना पड़े।

—प्लूटार्क

× × × ×

अगर तुम्हें किसी बात की कामना करनी ही है तो जन्मों के चक्र से छुटकारा पाने की कामना करो और वह छुटकारा तभी मिलेगा जब तुम कामना को जीतने की कामना करोगे।

—तिरुवल्लुवर

काम–भोग क्षण मात्र सुख देने वाले हैं और चिरकाल तक दु ख देने वाले। उनमे सुख वहुत थोडा है अत्याधिक दु ख ही दु ख है। मोक्ष–सुखके वे भयकर शत्रु हैं, अनर्थो की खान हैं।

—महावीर वाणी

× × × ×

मेरे पास यह है, मेरे पास वह नही, मुझे यह करना चाहिये, मुझे वह नही करना चाहिये। आदमी इस सुर मे वोलता रहता है कि काल डाकू उसे खीच ले जाता है। कैसी हिमाकत है ये।

—अज्ञात

× × × ×

उस काहिल आदमी को ज्ञान कभी नही मिलता जो कि जवान और वलवान् होते हुए भी ठीक वक्त पर नही उठता, जो प्रमादी है, जिस का मन निरर्थक विचारो से भरा रहता है, जोकि निकम्मा और सुस्त है।

—अज्ञात

× × × ×

हमारी सारी कठिनाइयाँ अपनी अकुशलता मे हैं। कुशलता आई कि हमे आज जो कष्ट कारक प्रतीत होता है वही आनन्द देने वाला मालूम होगा। तत्र सुव्यवस्थित

ग्रौर सात्विक होगा तो कभी कष्ट मालूम न होमा चाहिय।

—गांधी

× × × ×

जो विद्वान हो ग्रौर सरस हो उस से मिलो जो विद्वान हो ग्रौर दुष्ट हो उससे सचेत रहो जो मूर्ख हो ग्रोर सरस हो उस पर दया भाव रखो जो मूर्ख हो ग्रौर दुष्ट हो उससे हमेशा बचो।

—प्रकाश

× × × ×

जैसे किपाक फल रुप–रग ग्रौर रस की दृष्टि से शुरु मे खाते समय तो बडे ग्रच्छे मालूम होते है पर बाद मे जीवन के नाशक है वैसे ही काम भोग भी शुरु में तो बड़े मनोहर लगते है, पर विपाक काल में सर्वनाश कर देते हैं।

—जिन वाणी

× × × ×

कूट नीति कुदरती इन्सानी गुणों के खिलाफ एक ऐसा दुर्गुण है जिस मे दुनियां के बड़े हिस्से को गुलामी की जञ्जीरों में जकड रक्खा है ग्रौर जो मानवता के विकास में सब से बड़ी बाधा है।

—रोम्या रोलां

× × × ×

जिस तरह खौलते पानी मे अपना प्रतिविम्ब दिखाई नही दे सकता उस तरह क्रोधातूर मनुष्य यह नही समझ सकता कि उस का आत्म हित किस मे है।

—बुद्ध

× × × ×

जिस मनुष्य ने उच्चता को प्राप्त किया है, उसके हृदय में द्रोह का बोझ नही हुआ करता। और जिसके स्वभाव मे क्रोध हो, वह उच्च पद प्राप्त नही कर सकता।

—अज्ञात

× × × ×

मानव-जीवन नश्वर है, उस मे भी अपनी आयु तो वहुत हो परिमित है, एक मात्र मोक्ष-मार्ग ही अविचल है, यह जान कर काम-भोगो से निवृत्त हो जाना चाहिए।

—महावीर वाणी

× × × ×

वुद्धिमानी के साथ खर्च करता हुआ अन्दमी थोडे खर्चे से भी अपनी गुजर कर सकता है। मगर फिजूल खर्ची से सारे ब्रह्मण्ड की तरह सम्पदा भी नाकाफी हो सकती है।

—अज्ञात

× × × ×

तुझे इस वात का ख्याल बार वार क्यो आता है कि

फ्रन्नों मुझसे खुश है या नहीं ? तू सदा यही देख कि तेरा अन्तरात्मा तुम से खुश है या नहीं।

—हरि भाऊ उपाध्याय

× × × ×

जो लोग दूर दास्त को खुश करने का नियम बना बैठे हैं शायद ही किसी के लिये हृदय रखते हों। उनकी खुश करने की इच्छा का रहस्य खुद पसन्दी है और उनका मिजाज अकसर चंचल और बफ़ा कार होता है।

—सादी

× × × ×

खुदा के पाने का रास्ता सिवाय खल्क की यानी दूसरे की खिदमतके और कोई नही है। माला ले कर अल्लाह अल्लाह' रटने से चटाई बिछा कर नमाज पढ़ने से या गुदड़ी ओढ़ लेने से अल्लाह नहीं मिल सकता।

—एक सूफी

× × × +

मूर्ख मनुष्य धन पशु और जाति वालों को अपना मानता है और समझता है कि—ये मेरे हैं मैं उन का हूं। परन्तु इनमें से कोई भी आपत्ति काल मे त्राण तथा शरण देने वाला नहीं।

—जिन वाणी

× × × ×

आदमी आप ही अपना दोस्त है और आप ही अपना दुश्मन। जिस किसी ने अपने आपे (खुदी) को जीत लिया वह अपना दोस्त है और जिस का आपा उस पर सवार है। वह अपना दुश्मन है।

—गीता

× × × ×

एक नीच और दुष्ट आदमी द्वारा अश्लील गालियां दिये जाने पर कैटो ने उससे शान्त भाव से कहा—मेरा तेरा मुकाबला बडी ना बराबरी का है, क्योंकि तू दुर्वचन आसानी से सह सकता है, और खुशी से लौटा सकता है, लेकिन मेरे लिये उसका सुनना असामान्य है, और बोलना नाखुश गवार है।

—अज्ञात

× × × ×

चार हज़ार वचनो मे से मैंने चार गुर चुने है जिन मे से दो को सदा याद रखना चाहिये यानी मालिक और मौत, और दो को भूल जाना चाहिये यानी भलाई जो तू किसी के साथ करे और बुराई जो कोई तेरे साथ करे।

—लुकमान

× × × ×

वह सभा नही है जिस मे वृद्ध पुरुष न हो वे वृद्ध नही है

जो धर्म ही की बात नहीं बोलते वह धर्म नहीं है जिस में सत्य नहीं और न वह सत्य है जो कि छल से युक्त हो।

—महाभारत

× × × ×

जन्म का दुःख है जरा (बुढ़ापा) का दुःख है रोग और मरण का दुःख है। अहो! संसार दुःख रूप ही है! यही कारण है कि यहाँ प्रत्येक प्राणी जब देखो तब क्लेश ही पाता रहता है।

—महावीर वाणी

× × × ×

मनुष्य जब तक जबान पर काबू नहीं पा लेता तब तक बाकी इन्द्रियों को बस में कर लेने पर भी पूरा जितेन्द्रिय नहीं होता जिसने रसना जीत ली उसने सब कुछ जीत लिया।

—गांधी

× × × ×

अगर हम सच्चा जीवन व्यतीत करना चाहते हैं तो मानसिक आलस्य छोड़ कर हमें मौलिक विचार करना होगा। परिणाम यह होगा कि हमारा जीवन बहुत सरल हो जाएगा।

—गांधी

× × × ×

वहुत से लोग ऐसे हैं जो मर गये, मगर उनके गुण नही मरे, और वहुत से लोग ऐसे है जो जीविन है, किन्तु सर्व-साधारण की दृष्टि मे मृतक है। इस लिये गुण पैदा करो।

—अज्ञात

× × × ×

जिस तरह तन्दुरुस्ती उस आदमी को ढूढती है जो पेट खाली होने पर ही खाना खाता है, उसी तरह बीमारी उसको ढूढती फिरती है जो हद से ज्यादा खाता है।'

—तीरुवल्लुवर

× × × +

यह शरीर अनित्य है, अशुचि से उत्पन्न है, दुख और क्लेशो का धाम है। जीवात्मा का इस मे कुछ ही क्षणो के लिए निवास है, आखिर एक दिन तो अचानक छोड कर चले ही जाना है।

जिन वाणी

× × × ×

जो अपने काम मे तन्मय हो गया है उसे वोझ या नुकसान कुछ नही मालूम होता। जिसे काम मे प्रेमन ही उसे थोडा भी अधिक मालूम होता है जैसे कैदियो को एक दिन वर्ष की तरह मालूम होता है, भोगियो को एक वर्ष एक दिन की तरह।

—गाधी

जो धर्म ही की बात नहीं बोलते वह धर्म नहीं है जिसमें सत्य नहीं और न वह सत्य है जो कि छल से युक्त हो।

—महाभारत

× × × ×

जन्म का दुःख है जरा (बुढ़ापा) का दुःख है रोग और मरण का दुःख है। अहो! संसार दुःख रूप ही है! यही कारण है कि यहाँ प्रत्येक प्राणी जब देखो तब कष्ट ही पाता रहता है।

—महावीर स्वामी

× × × ×

मनुष्य जब तक जबान पर काबू नहीं पा लेता तब तक शेष इन्द्रियों को बस में कर लेने पर भी पूर्ण जितेन्द्रिय नहीं होता जिसने रसना जीत ली उसने सब कुछ जीत लिया।

—प्रमाण

× × × ×

अगर हम सच्चा जीवन व्यतीत करना चाहते हैं तो मानसिक आलस्य छोड़ कर हमें मौलिक विचार करना होगा। परिणाम यह होगा कि हमारा जीवन बहुत सरल हो जाएगा।

—गांधी

× × × ×

वहुत से लोग ऐसे हैं जो मर गये, मगर उनके गुण नही ", और वहुत से लोग ऐसे है जो जीविन है, किन्तु सर्व- ाधारण की दृष्टि मे मृतक है। इस लिये गुण पैदा करो।

—अज्ञात

× × × ×

जिस तरह तन्दुरुस्ती उस आदमी को ढूढती है जो ट खाली होने पर ही खाना खाता है, उसी तरह वीमारी सको ढूढती फिरती है जो हद से ज्यादा खाता है।

—तीरुवल्लुवर

× × × +

यह शरीर अनित्य है, अशुचि से उत्पन्न है, दुख और क्लेशो का धाम है। जीवात्मा का इस मे कुछ ही क्षणो के लिए निवास है, आखिर एक दिन तो अचानक छोड कर चले ही जाना है।

जिन वाणी

× × × ×

जो अपने काम मे तन्मय हो गया है उसे वोझ या नुकसान कुछ नही मालूम होता। जिसे काम मे प्रेम न हो उसे थोडा भी अधिक मालूम होता है जैसे कैदियो को एक दिन वर्ष की तरह मालूम होता है, भोगियो को एक वर्ष एक दिन की तरह।

जो धम ही की बात नही बोलते वह धर्म नहीं है जिसमें सत्य नही और न वह सत्य है जो कि छल से युक्त हो।

—महाभारत

× × × ×

जन्म का दुख है जरा (बुढापा) का दुख है रोग और मरण का दुख है। अहो! संसार दुख रूप ही है! यही कारण है कि यहाँ प्रत्येक प्राणी जब देखो तब क्लेश ही पाता रहता है।

—महावीर वाणी

× × × ×

मनुष्य जब तक जबान पर काबू नही पा लेता तब तक शेष इन्द्रियो को वश में कर लेने पर भी पूरा जितेन्द्रिय नहीं होता जिसने रसना जीत ली उसने सब कुछ जीत लिया।

—महात्मा

× × × ×

अगर हम सच्चा जीवन व्यतीत करना चाहते हैं तो मानसिक आलस्य छोड़ कर हमें मौलिक विचार करना होगा। परिणाम यह होगा कि हमारा जीवन बहुत सरल हो जाएगा।

—गांधी

× × × ×

बहुत से लोग ऐसे हैं जो मर गये, मगर उनके गुण नहीं मरे, और बहुत से लोग ऐसे हैं जो जीवित है, किन्तु सर्व-साधारण की दृष्टि मे मृतक हैं। इस लिये गुण पैदा करो।

—प्रमान

x x x x

जिस तरह तन्दुरुस्ती उस आदमी को ढूंढती है जो खाली होने पर ही खाना खाता है, उसी तरह बीमारी उसको ढूंढती फिरती है जो हद से ज्यादा खाता है।

—नौम्वल्लुवर

x x x +

यह शरीर अनित्य है, अशुचि से उत्पन्न है, दुःख और क्लेशो का धाम है। जीवात्मा का इस में कुछ ही क्षणो के लिए निवास है, आखिर एक दिन तो अचानक छोड कर चले ही जाना है।

जिन वाणी

x x x x

जो अपने काम में तन्मय हो गया है उसे बोझ या नुकसान कुछ नहीं मालूम होता। जिसे काम में प्रेम न हो उसे थोडा भी अधिक मालूम होता है जैसे कैदियों को एक दिन वर्ष की तरह मालूम होता है रोगियों को एक वर्ष एक दिन है।

जो मनुष्य तृष्णा होकर दौलत और इज्जत के पीछे दौड़ता हुआ है वह तृषा–रोगी समुद्र जल से अपनी प्यास बुझाना चाहता है। जितना ज्यादा पीता है उतना ही ज्यादा और पीना चाहता है आखिरकार पीते पीते मर जाता है।

—स्वामी रामतीर्थ

× × × ×

जो मनुष्य तर्क–वितर्क आदि संशयो से पीड़ित है और तीव्र राग में फसा हुआ है तथा सुख ही सुख की अभिलाषा करता है उसकी तृष्णा बढ़ती ही जाती है और वह प्रतिक्षण अपने लिये और भी मजबूत बंधन तयार करता जाता है।

—बुद्ध

× × × ×

जिस तरह सिंह हिरण को पकड़ कर ले जाता है उसी तरह अन्त समय मृत्यु भी मनुष्य को उठा ले जाती है। उस समय माता पिता भाई आदि कोई भी उसके दुख में भागीदार नही होते–परलोक में उसके साथ नहीं जाते।

—महावीर स्वामी

× × × ×

त्याग यह नही कि मोटे और सख्त कपड़े पहिन लिये जायें और सूखी रोटी खाई जाय। त्याग तो यह है कि अपनी आरजू, इच्छा और ख्वाहिश को जीता जावे।

जिस ने इच्छा का त्याग किया उसको छोडने की क्या आवश्यकता है, और जो इच्छा से बधा हुआ है उसको वनमे रहने से क्या लाभ हो सकता ? सच्चा त्यागी जहाँ रहे वही वन और वही भजन-कदरा है।

—महाभारत

× × × ×

अपनी त्रुटि का पता चलने के बाद उसे मिटाने मे थोडा भी समय न खोना चाहिये। इसी मे हम कुछ करते है, यही नही बल्कि सच्चा काम करते है। इस के विपरीत आचरण करके अपने धर्म को भूल जाना सचमुच बुरे से बुरा काम है।

—गाधी

× × × ×

जो दूसरे आदमी के दु ख मे दया दिखाता है वह स्वय दु ख से छूट जायेगा, और जो दूसरे के दु ख की अवगणना करता है या उस पर हर्ष मनाता है वह कभी–न–कभी उस मे स्वय जा पडेगा।

—सर वाल्टर रैले

× × × ×

दया धर्म से हीन धर्म पाखण्ड है। दया ही धर्म का

मूल है और उनका त्याग करने वाला ईश्वर का त्याग करता है। रंक का त्याग करने वाला सब का त्याग करता है।

—रवी

× × × ×

चार तरह के आदमी होते हैं–(१) मक्खी चूस जो न आप खाय न दूसरे को दे (२) कंजूस जो आप खाय पर दूसरे को न दे (३) उदार जो आप भी खाय और दूसरे को भी दे (४) दाता जो आप न खाय और दूसरे को दे। सब लोग अगर दाता नहीं बन सकते तो उदार तो जरूर बन सकते हैं।

—[illegible]

× × × ×

पापी जीव के दुःख को न जाति बँटा सकते हैं न मित्र वर्ग न पुत्र और न भाई–बन्धु। जब कभी दुःख आकर पड़ता है तब वह स्वयं अकेला ही उसे भोगता है। क्योंकि कर्म अपने कर्त्ता के ही पीछे लगते हैं अन्य किसी के नहीं।

—जिन वाणी

× × × ×

जीवन का अनुरोध–मेरा पाठ चाहे इसे हम जल्दी सीख या देर से यह है कि देने से दाता को पहले और सब

से अधिक श्री वृद्धि होती है और उस मे साधु शीलता आती है।

—अज्ञात

× × × ×

जो अपने भोजन की मात्रा जानता है और उससे ज्यादा नहीं खाता, उसे कब्ज की तकलीफ नही होती और वह दीर्घ काल तक जवान रहता है।

—बुद्ध

× × × ×

अगर सेवक सुख चाहे, भिखारी मान चाहे, व्यसनी धन चाहे, तो समझ लो कि ये लोग आकाश-से दूध दुहना चाह रहें हैं।

—रामायण

× × × ×

दुष्ट आदमी हमेशा दूसरो को कष्ट देने मे लगा रहता है। इसके लिये उसे कारण की ज़रुरत नही होती, क्योंकि उसे वह अपना फर्ज समझकर करता है।

—अज्ञात

× × × ×

जो मनुष्य काम—भोगो मे आसक्त होते हैं, वे पाश मे फस कर बुरे—से बुरे पाप—कर्म कर डालते हैं। ऐसे लोगो को

मान्यता होती है कि परलोक हमने देखा नहीं है और यह विद्यमान काम भोगों का आनन्द तो प्रत्यक्ष सिद्ध है।

—महावीर वाणी

× × × ×

जो अप्रिय वचनों के दरिद्री हैं प्रिय वचनों के धनी हैं अपनी ही स्त्री से सन्तुष्ट रहते हैं और पराई निन्दा से बचते हैं ऐसे पुरुषों से कहीं कहीं भी ही पृथ्वी शोभायमान है।

—भर्तृहरि

आदमी से पाप कराने वाली दो ही चीजें हैं। ये दो ही इस दुनिया में आदमी की दुश्मन हैं—एक 'काम' और दूसरा 'क्रोध' जिस तरह धुआँ आग को ढक लेता है और गर्द शीशे को अन्धा कर देती है, इसी तरह ये दोनों आदमी की अक्ल पर पर्दा डाल देते हैं।

—गीता

दुष्कर्म का एक फल तो तत्काल यह मिलता है कि आत्मा एक 'वज़न' पसम को महसूस करती है। दूसरे के दिल को दुखा कर आत्मा सुख नहीं करती। इसी तरह चोर अपने चुराये धन को कभी आनन्दोल्लास से नहीं भोग सकता।

—धम्मपद

दुष्टो के दोषो की चर्चा करने से अपना चित्त प्रक्षुब्ध ही होता है इस लिए उसके वर्तन की ओर लक्ष्य न देकर अथवा उस की चर्चा करते न बैठ कर उसके प्रति उपेक्षा दृष्टि से देखना ही अपने लिये श्रेयस्कर है।

—विवेकानन्द

× × × ×

जिस तरह हमेशा भय भ्रान्त रहने वाला चोर अपने ही दुष्कर्मों के कारण दुख उठाता है, उसी तरह मूर्ख मनुष्य भी अपने दुराचरणो के कारण दुख पाता है, और वह अत काल मे भी सवर धर्म की आराधना नही कर सकता।

—जिन वाणी

× × × ×

हिरन, मछली और सज्जन ये तीनो केवल घास, जल और सन्तोष सेवन कर अपनी रोजी चलाते हैं। फिर भी इस दुनिया मे शिकारी, धीवर और दुर्जन उन के नाहक दुश्मन बनते हैं।

—भर्तृहरि

× × × ×

जिस वक्त हमको दुःख की प्राप्ति होती है उस वक्त किसी और को दोष देने का कारण नहीं। अपना ही दोष ढूंढ निकालना आप वीरों का काम है।

—विवेकानन्द

× × × ×

दुःख को न तो माते दार बँटाते हैं न रिश्तेदार, न मित्र न पुत्र। मनुष्य उसे अकेला ही भोगता है क्योंकि कर्म तो करने वाले के ही पीछे लगते हैं।

—महाव

× × × ×

कोई आदमी धन कमा कर मर जाय और हराम खोरों के लिये लड़ने खाने को छोड़ जाय—इस से बड़ा गुनाह नहीं। मैं कसम खाकर कहता हूँ कि अपनी जिन्दगी में ही अपने सारे धन को परोपकार में लुटा दूंगा।

—कारनेगी

× × × ×

जो बुद्धिमान मनुष्य मोह निद्रा में सोते रहने वाले मनुष्यों के बीच रह कर संसार के छोटे—बड़े सभी प्राणियों को अपनी आत्मा के समान देखे इस महान् विश्व का निरीक्षण करे सर्वदा अप्रमत्त भाव से संयमा चरण में रत रहे वही मोक्ष गति का सच्चा अधिकारी है।

—महावीर स्वामी

लज्जा वानो को मूर्ख, व्रत—उपवास करने वालो को ठग, पवित्रता से रहने वालो को धूर्त, शूर वीरो को निर्दयी, चुप रहने वालो को निर्बुद्धि, मधुर-भाषियो को दीन, तेजस्वियो को अहँकारी, वक्ताओ को बकवादी और शान्त पुरुषो को असमर्थ कह कर दुष्टो ने दुनिया के कौन से गुण को कलंकित नही किया।

—भर्तृहरि

× × × ×

तुम्हारी वास्तविक दौलत सिर्फ उतनी है जिसे तुम सत् पात्र को देते हो और जिसका कि दिन ब दिन उपभोग करते हो। शेष भाग दूसरो का है, तुम तो उसके महज रखवाले हो।

—अज्ञात

× × × ×

मानव हृदय के लिये तंगी और तवंगरी दोनो ही भार हैं, जैसे मानव शरीर के लिये हिम और अग्नि दोनो ही घातक हैं। फाका कशी और पेटू पन दोनो समान रुप से मनुष्य के हृदय से ईश्वर को रुखसत कर देते हैं।

—थ्याडोर पार्कर

× × × ×

जिस वक्त हमको दुःख की प्राप्ति होती है उस वक्त किसी और को दोष देने का कारण नहीं। अपना ही दोष ढूंढ निकालना ज्ञान वीरों का काम है।

—विवेकानन्द

× × × ×

दुःख को न तो नाते दार बँटाते हैं न रिश्तेदार, न मित्र न पुत्र। मनुष्य उसे अकेला ही भोगता है क्योंकि कर्म तो करने वाले के ही पीछे लगते हैं।

—महावीर

× × × ×

कोई आदमी धन कमा कर मर जाय और हराम खोरों के लिये सड़ने खाने को छोड़ जाय—इस से बड़ा गुनाह नहीं। मैं कसम खाकर कहता हूँ कि अपनी जिन्दगी में ही अपने सारे धन को परोपकार में लुटा दूंगा।

—कारनेगी

× × × ×

जो बुद्धिमान मनुष्य मोह निद्रा में सोते रहने वाले मनुष्यों के बीच रह कर संसार के छोटे—बड़े सभी प्राणियों को अपनी आत्मा के समान देखे इस महान् विश्व का निरीक्षण करे सर्वदा अप्रमत्त भाव से संयमा चरण में रत रहे वही मोक्ष गति का सच्चा अधिकारी है।

—महावीर स्वामी

लज्जा वानो को मूर्ख, व्रत–उपवास करने वालो को ठग, पवित्रता से रहने वालो को धूर्त्त, शूर वीरो को निर्दयी, चुप रहने वालो को निर्बुद्धि, मधुर-भाषियो को दीन, तेजस्वियो को अहँकारी, वक्ताओ को बकवादी और शान्त पुरुषो को असमर्थ कह कर दुष्टो ने गुनिया के कौन से गुण को कलकित नही किया।

—भर्तृहरि

× × × ×

तुम्हारी वास्तविक दौलत सिर्फ उतनी है जिसे तुम सत् पात्र को देते हो और जिसका कि दिन ब दिन उपभोग करते हो। शेष भाग दूसरो का है, तुम तो उसके महज़ रखवाले हो।

—अज्ञात

× × × ×

मानव हृदय के लिये तगी और तवगरी दोनो ही भार हैं, जैसे मानव शरीर के लिये हिम और अग्नि दोनो ही घातक हैं। फाका कशी और पेटू पन दोनो समान रुप से मनुष्य के हृदय से ईश्वर को रुखसत कर देते हैं।

—थ्याडोर पार्कर

× × × ×

प्रत्येक उद्यमी मनुष्य को आजीविका पाने का अधिकार है मगर धनोपार्जन का अधिकार किसी को नहीं। सच कहें तो धनोपार्जन स्तेय है चोरी है। जो आजीविका से अधिक धन लेता है वह भान में हो या अनजान में दूसरों की आजीविका को छीनता है।

—गांधी

× × × ×

यदि अपने से गुणों में अधिक या समान गुण वाला साथी न मिले तो पाप कर्मों का परित्याग कर तथा काम भोगों में सर्वथा अनासक्त रह कर अकेला ही विचारे। परन्तु दुराचारी का कभी भूल कर भी संग न करें।

—जिन वाणी

× × × ×

अपना कुल धन निर्धनों में बँटवा कर मुहम्मद साहब ने कहा अब मुझे शांति मिली। निस्सन्देह यह शोभा नहीं देता था कि मैं अपने अल्लाह से मिलने जाऊँ और यह बोझा मेरी मिल्कियत रहे।

—प्रभात

× × × ×

एक धर्म से दूसरे में लोगों को लेने की प्रथा मुझे जरा भी अच्छी नहीं लगती। दो विभिन्न धर्मों के स्त्री-पुरुषों

में विवाह होना असभव अथवा अयोग्य है, ऐसा मैं नहीं मानता।

—गांधी

× × × ×

टालस्टाय द्रव्य को पाप मानते थे, उन की पत्नी द्रव्य को ही सर्वस्व मानती थी। इस तरह दोनो के स्वभाव की असमानता के कारण उन का जीवन कलुषित बन गया था, और टालस्टाय ने ८२ वर्ष की उम्र में ग्रह-त्याग किया। मरते वकत उन्हो ने कहा "मेरे मरण के समय मेरी पत्नी को मेरे पास नही आने देना।"

—अज्ञात

× × × ×

किसी काम को सिद्ध करने के हेतु से या भय अथवा लोभ के कारण धर्म का त्याग नही करना आजीविका तक का नाश होता हो तो भी धर्म का त्याग नही करना। धर्म नित्य है, सुख, दुख अनित्य है, जीव, नित्य है, शरीर अनित्य है।

—महाभारत

× × × ×

उस आदमी की ज़िन्दगी हैवान की ज़िन्दगी है जिसने धर्म, धन और सुख प्राप्त नही किया; लेकिन इन तीन

धर्म प्रमुख है, क्योंकि धर्म के बिना न धन सम्भव है न सुख।

—प्रसाद

× × × ×

मूर्ख साधक कितना ही प्रयत्न क्यों न करे, किन्तु पाप-कर्मों से पाप-कर्मों को कदापि नष्ट नहीं कर सकते। बुद्धिमान् साधक वे हैं जो पाप कर्मों के परित्याग से पाप-कर्मों को नष्ट करते हैं। मद एवं लोभ और भय से रहित सर्वथा सन्तुष्ट रहने वाले मेधावी पुरुष किसी भी प्रकार का पाप कर्म नहीं करते।

—महावीर स्वामी

× × × ×

मगर धर्म कल इस दुनिया से बिल्कुल नष्ट हो गया तो क्या होगा? उस में से मनुष्य ही नष्ट हो जायेंगे और दुनिया गोया पशु का साम्राज्य हो जायगी। जंगल में घूमने वाले पशुओं और ऐसी स्थिति वाले मनुष्यों में कोई फर्क नहीं रहने वाला। केवल इन्द्रियों की वासना तृप्त करते बैठना यही मनुष्य का साध्य नहीं है स्वतः शुद्ध ज्ञान रूप होना यही उसका साध्य है।

—विवेकानन्द

× × × ×

जो धर्म के गौरव को पूज्य मान कर शात और मग्न होता है उसी को सच्चा शान्त और सच्चा नम्र समझना चाहिये। अपना मतलब साधने के लिये कौन शात और नम्र नहीं बन जाता ?

—बुद्ध

× × × ×

जितना सम्भव था उतना विविध धर्मों का अध्ययन करने के बाद मैं इस निर्णय पर आया कि सब धर्मों का एकीकरण करना यदि उचित और आवश्यक है, तो उन सब की एक महा चाबी होनी चाहिये। यह चाबी सत्य और अहिंसा है।

—गांधी

× × × ×

अपने-आप को ही दमन करना चाहिए। वास्तव मे अपने-आप को दमन करना ही कठिन है। अपने-आप को दमन करने वाला इस लोक मे तथा परलोक में सुखी होता है।

—जिन वाणी

× × ×

अगर तू दुनिया में धर्मात्मा और पुण्यवान बनना चाहता है तो ऐसे काम कर जिससे किसी को कष्ट न पहुँचे। मौत का कभी भय मत कर और रोटियों की चिन्ता छोड़ दे क्योंकि यह दोनों चीजें वक्त पर खुदाही हाजिर हो जाती है।

—[illegible]

× × × ×

नीति निपुण लोग निन्दा करें या स्तुति लक्ष्मी आवे या जावे मृत्यु आज हो या जन्म या युगान्तर के बाद परन्तु धीर पुरुषों का न्याय मार्ग से कदम नहीं डिगता।

—भर्तृहरि

× × × ×

शूरवीरता का सब से नफ़ीस सब से शानदार और सब से नायाब अंग है धीरज। सुनाम, खुशियां और तमाम शक्तियों का मूलाधार है धीरज।

—जान रस्किन

× × × ×

जो तुम से पूछे उसे नम्रता से जवाब देना, जो तुम को गालियां दे उसे मीठे वचन कहना, जो तुम को दुःखी करे उस

श्वर तेरा भला करें कहना। क्योकि प्रभु के काम के लिए
जन को निन्दा सहनी पडती है। उन की प्रभु के दरबार
में ज्यादा कीमत होती है।

—अज्ञात

× × × ×

सिर काटने वाला शत्रु भी उतना अपकार नही करता, जितना कि दुराचरण मे लगी हुई अपनी आत्मा करती है। दया शुन्य दुराचारी को अपने दुराचरणो का पहले ध्यान नही आता, परन्तु जब वह मृत्यु के मुख मे पहुँचता है, तब अपने सब दुराचरणो को याद कर-कर पछताता है।

—महावीर वाणी

× × × ×

शुद्ध भाव से नाम जपने वालो मे श्रद्धा होती है—जो जीभ से होता है वह अन्त मे हृदय उतरता है। और उससे शुद्धि होती है। यह अनुभव निरपराद है। मनुष्य जैसा विचार करता है वैसा होता है, नाम जपने पर मेरी श्रद्धा अटूट है।

—गांधी

× × × ×

तृष्णा से सब गुणों का नाश होता है अभिमान से ज्ञान का नाश होता है याचना करने से गौरव नष्ट होता है अपनी प्रशंसा करने से गुणों का चिन्ता से बल का और अदया से लक्ष्मी का नाश होता है।

—व्यास

× × × ×

सारे संसार में सब अधिक विवेक भ्रष्ट वह आदमी है जो लोगों की निन्दा में व्यस्त रहता है—जैसे मक्खी रुग्ण स्थानों को ही ताड़ा करती है।

—इस्माईल-इब्न-आबीबकर

× × × ×

जिस तरह आदमी साँप के फन से दूर रहता है उसी तरह जो काम भोग से दूर रहता है वह इस विषय की तृष्णा का त्याग करके निर्वाण-पथ की ओर अग्रसर होता है।

—बुद्ध

× × × ×

सम्पदा पानी की लहर की तरह चञ्चल है जवानी तीन चार दिन रहती है आयु शरद ऋतु की बदली की तरह नष्ट होने वाली है फिर धन से क्या फ़ायदा है? दूसरों की भलाई कर।

—व्यास

अपनी आत्मा के साथ ही युद्ध करना चाहिए, बाहरी स्थूल शत्रुओ के साथ युद्ध करने से क्या लाभ ? आत्मा के द्वारा आत्मा को जीतने वाला ही वास्तव मे पूर्ण सुखी होता है।

—जिनवाणी

× × × ×

सच्चे सुधार का, सच्ची सभ्यता का लक्षण परिग्रह बढाना नही है, बल्कि उसका विचार और इच्छा पूर्वक घटाना है। ज्यो-ज्यो परिग्रह गटाईये त्यो-त्यो सच्चा सुख सन्तोष वढता है, सेवा शक्ति बढती है।

—गाधी

× × × ×

अगर तू किसी एक आदमी की भी तकलीफ को दूर करो तो यह ज्यादा अच्छा काम है वजाय इसके कि तू हज्ज को जाय और रास्ते की हर मंजिल पर एक एक हज़ार रकअत नमाज़ पढता जाय।

—सादी

× × × ×

सत्य के पुजारी पर परिस्थिति का प्रभाव न पड़ना चाहिये। उस को भेद कर उस में से पार हो जाना ही उस का कर्तव्य है। परिस्थिती के कारण बने हुए कितने ही विचार गलत ठहरते है यह हम देखते हैं।

—गांधी

× × × ×

अठारह पुराणों के अन्दर व्यास जी ने दो ही बातें कही हैं वे ये हैं—दूसरों का भला करना पुण्य यानी सवाब है और किसी दूसरे को तकलीफ़ देना पाप यानी गुनाह है।

—व्यास जी

× × × ×

मनुष्य के स्थायी सुख का कारण दूसरे को सुखी करने के सिवा कुछ नहीं है। आज जसे लोग पैसा इज्जत वगैरह के पीछे पागल हुए फिरते हैं वैसे ही एक दिन सारी मनुष्य जाति दूसरों को सुखी बनाने के लिए पागल हुई फिरेगी।

—चवान

× × × ×

हम निजी जीवन की पवित्रता की आवश्यकता मानते ...इतना ही नही, हम तो ऐसा भी मानते हैं कि अन्त ...द्धि के विना केवल वुद्धि से हुए कार्य चाहे जितने अच्छे ...लूम होवे हो तो भी कभी चिरस्थायी नही हो सकते ।

—गाधी

× × × ×

जो जाति का अभिमान नही करता जो रूप का अभिमान नही करता जो लाभ का अभिमान नही करता जो श्रुत (पाडित्य) का अभिमान नही करता, जो सभी प्रकार के अभिमानो का परित्याग कर केवल धर्म-ध्यान मे ही रत रहता है, वही भिक्षु है ।

—महावीर वाणी

× × × ×

जो काम अपनी खुदी को विल्कुल अलग रख कर, अपने निजी सुख दु ख, नफे नुकसान और जीत–हार का खयाल न करते हुऐ, सिर्फ फर्ज समझ कर किया जावे, उस से करने वाले को पाप नही लगता ।

—गीता

× × × ×

आदमी शक्ति शाली हो, लेकिन अगर वह अपनी

योग्यता दिखाये तो लोग उस का तिरस्कार ही करते हैं आग जब तक लकड़ी में छिपी रहती है तब तक हर को उसे लांघ जाता है मगर जलती हुई को नहीं।

—प्रज्ञान

× × × ×

प्रमाद न करो ध्यान में लीन रहो लोगों के चक्कर में न पड़ो प्रमाद के कारण तुम्हें लोहे का लाल-गरम गोला निगलना पड़े और दुःख की आग से जलते वक्त तुम्हें मु चीखना पड़े कि 'हाय यह दुःख है।

—बुद्ध

× × × ×

प्रशंसा विभिन्न व्यक्तियों पर प्रभाव डालती है यह विवेकी को नम्र बनाती है और मूर्ख को और भी अहंकारी बना कर उसके दुर्बल मन को मदहोश कर देती है।

—फैल्थम

× × × ×

मन और शरीर में गहरा और अविच्छिन्न सम्बन्ध है यदि मन प्रसन्न है तो शरीर स्वस्थ और स्वतंत्र अनुभव करता है प्रसन्नता से बहुत पाप पलायन कर जाते हैं।

—गेटे

× × × ×

समस्त इन्द्रियो को खूब अच्छी तरह समाहित करते हुए पापो से अपनी आत्मा की निरतर रक्षा करते रहना चाहिए। पापो से अरक्षित आत्मा ससार मे भटका करती है और सुरक्षित आत्मा ससार के सब दुखो से मुक्त हो जाती है।

—जिनवाणी

× × × ×

जो अपनी छलकती आंखो से, पवित्र विचारो से, मीठे शब्दो से और शुभ कार्यों से आनन्द बरसाता है, लोग उस को हमेशा प्रसन्न रखते हैं।

—अज्ञात

× × × ×

जैसे कछुआ अपने अगो को समेट लेता है उसी तरह जो अपनी इन्द्रियो को उनके विषयो से हटा लेता है, उस की बुद्धि स्थिर हो जाती है।

—गीता

× × × ×

किसी भी व्यक्ति मे कोई एक ही विशेषता होती है और उसी से वह प्रसिद्धि पा जाता है। देखिये, क्या केवडे मे फल लगते हैं ? क्या पान की वेल मे फूल या फल लगते हैं ?

—अज्ञात

प्रार्थना का उद्देश्य मनुष्य को पूर्ण मनुष्य बना देना और हृदय को पवित्र कर देना है। मैले हृदय से प्रार्थना करना व्यर्थ है। कम से कम प्रार्थना के समय तो हमें हृदय को साफ रखना चाहिये।

—गांधी

× × × ×

मुमुक्षु आत्मा ज्ञान से जीवादिक पदार्थों को जानता है दर्शन से श्रद्धान करता है चारित्र से भोग–वासनाओं का निग्रह करता है और तप से कर्म मल रहित होकर पूर्णतया शुद्ध हो जाता है।

—महावीर स्वामी

× × × ×

आपस में लेने-देने से जो प्रेम पैदा होता है वह प्रेम उस लेने-देने की समाप्ति के साथ ही समाप्त हो जाता है। बिना किसी स्वार्थ की गन्ध के जो प्रेम होता है वही सच्चा प्रेम है।

—बुद्ध

× × × ×

जल दूध से मिल कर दूध के भाव बिकता है। देखिये प्रेम की यह कैसी अच्छी रीति है। लेकिन प्रेम में कपट आ पड़ तो मिले हुए हृदय ऐसे फट जाते हैं जैसे खटाई पड़ने से दूध और पानी अलग अलग हो जाते हैं।

—रामायण

हम सारे दिन कितनी बड-बड करते है, यह ध्यान देकर थोडे दिन देखें तब हमे मालूम होगा कि हम अपनी शक्ति का कितना व्यर्थ व्यय करते है। धनुष से छुटा हुआ वाण जैसे वापिस नही आता, उसी तरह एक वार फिजूल गई हुई शक्ति फिर प्राप्त नही होती।

—विवेकानन्द

× × × ×

जो आदमी बुराई की आशका करने का आदि है अक्सर अपने पडोसी मे वही देखता है जो वह स्वय अपने अदर देखता है। पवित्र के लिये सब चीज़ें पवित्र है उसी तरह नापाक के लिये सब चीज़ें नापाक।

—हेअर

× × × ×

इन तीन को बुद्धिमान जानना—जिस ने ससार का त्याग कर दिया है, जो मौत आने के पहले सब तैयारियाँ किये बैठा है, और जिसने पहले ही से ईश्वर की प्रसन्नता प्राप्त कर ली है।

—हयहया

× × × ×

जो सब जीवो को अपने ही समान समझता है, अपने

प्रार्थना का उद्देश्य मनुष्य को पूर्ण मनुष्य बना देना और हृदय को पवित्र कर देना है। मैले हृदय से प्रार्थना करना व्यर्थ है। कम से कम प्रार्थना के समय तो हमें हृदय को साफ रखना चाहिये।

—गांधी

× × × ×

मुमुक्षु आत्मा ज्ञान से जीवादिक पदार्थों को जानता है दर्शन से श्रद्धान करता है चारित्र से भोग—वासनाओं का निग्रह करता है और तप से कर्म मल रहित होकर पूर्णतया शुद्ध हो जाता है।

—महावीर स्वामी

× × × ×

आपस में लेने-देने से जो प्रेम पैदा होता है वह प्रेम उस लेने-देने की समाप्ति के साथ ही समाप्त हो जाता है। बिना किसी स्वार्थ की गंध के जो प्रेम होता है वही सच्चा प्रेम है।

—बुद्ध

× × × ×

जल दूध से मिल कर दूध के भाव बिकता है। देखिये प्रेम की यह कैसी अच्छी रीति है। लेकिन प्रेम में कपट आ पड़ता मिले हुए हृदय ऐसे फट जाते हैं जैसे खटाई पड़ने से दूध और पानी अलग अलग हो जाते हैं।

—रामायण

करो और वह जिसे तुम से शत्रुता थी तुम्हारा दिली दोस्त हो जायगा।

—हजरत मुहम्मद

× × × ×

जो बडी-बडी शक्तियाँ प्राप्त करता है, बहुत सभव है वह मिथ्याभिमान से और झूठ शान से फूल उठे, और निश्चय ही वह अपने परमात्म पद को एक दम भूल जाता है।

—रामकृष्ण परम हंस

× × × ×

सुन कर ही कल्याण का मार्ग जाना जाता है। सुन कर ही पाप का मार्ग जाना जाता है। दोनो भी मार्ग सुन कर ही जाने जाते है। बुद्धिमान् साधक का कर्त्तव्य है कि पहले श्रवण करे और फिर अपने को जो श्रेय मालूम हो, उस को आचरण करे।

—महावीर वाणी

× × × ×

जो न आनन्द से फूलता है और न दु खो से दु खो होता है, जिसे न किसी चीज के जाने का रज और न पाने की खुशी, जिसने अपने लिये अच्छे और बुरे दोनो तरह के नतीजो का त्याग कर दिया, वह भक्त ईश्वर को प्यारा है।

—गीता

पराये सब को समान दृष्टि से देखता है जिसने सब आस्रवों का निरोध कर लिया है जो बबस इन्द्रियों का दमन कर चुका है उसे पाप-कर्म का बन्धन नहीं होता।

—जिन वाणी

× × × ×

जो हर हालत में सन्तुष्ट पाक आलस्य रहित मेरे-तेरे से ऊपर और दुःख से परे है जो नतीजे की परवाह न कर हमेशा अपने फ़र्ज़ को पूरा करने में लगा रहता है वही भक्त ईश्वर को प्यारा है।

—गीता

× × × ×

यदि तू ईश्वर के प्रेम में पागल होता तो बज़ू नहीं करता ज्ञानी होता तो दूसरे की स्त्री पर नजर नहीं डालता और जो ईश्वर-दर्शी होता तो ईश्वर को छोड़ कर तेरी नजर दूसरी ओर नहीं दौड़ती।

—मजाज

× × × ×

सब से अच्छी बात वह करता है जो अल्लाह को और लोगों को बुलाता है और स्वयं नेक काम करता है और फिर कहता है कि मैं मुसलमान हूँ। बुराई को भलाई से दूर

रहित हो जाती है, तव सव कर्मो को क्षय कर सर्वथा सिद्धि (मुक्ति) को प्राप्त होती है।

—जिनवाणी

× × × ×

उस मनुष्य को देखो जिस ने विद्या और बुद्धि प्राप्त कर ली है, जिस का मन शान्त और पूरी तरह वश मे है, धार्मिकता और नेकी उस का दर्शन करने के लिये उसके घर मे आती है।

—तीरुवल्लुवर

× × — ×

मूर्ख कौन है ? वकवादी। मुर्ख को चाहिये कि सभा में मुँह न खोले और बुद्धिमान सिर्फ सवाल का जवाव देने के लिये। वहुत सुनना और थोडा बोलना यही बुद्धिमान का लक्षण है।

—बुजरचिमिहर

× × × ×

शरावी, कामी, कजूस, मूर्ख, अत्यन्त दरिद्री, वदनाम, वहुत वूढा, सदा रोगी, सतत क्रोधी, ईश-विमुख, श्रुति-सत विरोधी, तन-पोषक, निन्दक और पापी, ये चौदह प्राणी जीते हुए भी मुर्दे के समान हैं।

—रामायण

देखो जो आदमी अपने दिल से सचमुच तो किसी चीज को छोड़ता नहीं मगर बाहर त्याग का आडम्बर रचता है और लोगों को ठगता है उससे बढ़ कर कठोर-हृदय दुनिया में और कोई नहीं है।

—तीरुवल्लुवर

× × × ×

मन ही मनुष्यों के बन्धन और मोक्ष का कारण है। जिस ने अपनी देह और मन-धाम में आपा ठाना वह बँधा हुआ है जिस ने इन को मिथ्या समझ लिया वही मोक्ष को प्राप्त हुआ।

—सर्वोपनिषद

× × × ×

मन पाँच तरह के होते हैं —(१) मुर्दार मन जैसे नास्तिकों का (२) रोगी मन जैसे पापियों का (३) अचेत मन जैसे पेट भरों का (४) औंधा मन जैसे कड़ा ब्याज खाने वालों का (५) जगा मन जैसे सज्जनों का।

—चारस बाग

× × ×

जब मन वचन और शरीर के योगों का निरोध कर आत्मा ऐसी अवस्था को पाती है–पूर्ण रूप से स्पन्दन

रहित हो जाती है, तब सब कर्मों को क्षय कर सर्वथा सिद्धि (मुक्ति) को प्राप्त होती है।

—जिनवाणी

× × × ×

उस मनुष्य को देखो जिस ने विद्या और बुद्धि प्राप्त कर ली है, जिस का मन शान्त और पूरी तरह वश मे है, धार्मिकता और नेकी उस का दर्शन करने के लिये उसके घर मे आती है।

—तीरुवल्लुवर

× × — ×

मूर्ख कौन है ? वकवादी। मुर्ख को चाहिये कि सभा में मुँह न खोले और बुद्धिमान सिर्फ सवाल का जवाव देने के लिये। वहुत सुनना और थोडा वोलना यही बुद्धिमान का लक्षण है।

—वुजरचिमिहर

× × × ×

शराबी, कामी, कजूस, मूर्ख, अत्यन्त दरिद्री, वदनाम, वहुत वूढा, सदा रोगी, सतत क्रोधी, ईश-विमुख, श्रुति-सत विरोधी, तन-पोपक, निन्दक और पापी, ये चौदह प्राणी जीते हुए भी मुर्दे के समान है।

मैं धर्म-कर्म पर तो विश्वास नहीं करता प-
नियम को मानता हूँ कि अच्छे काम का परिए
होता है और बुरे काम का परिणाम बुरा।

—

× × × ×

मले कपड़े पहिनने वालों को गन्दे दान्त वालों
अधिक भोजन करने वालों को निष्ठुर बोलने वालों का
और सुर्योदय के बाद सोने वालों को लक्ष्मी छोड़ देती है
चाहे वह विष्णु ही क्यों न हों।

—प्रभात

× × × ×

मैं समस्त जीवों से क्षमा माँगता हूँ और सब जीव मुझे
भी क्षमा दान दें। सर्व जीवों के साथ मेरी मैत्री वृत्ति है
किसी के भी साथ मेरा बैर नहीं है।

—महावीर वाणी

× × × ×

सङ्कल्प कर लेना चाहिये कि असत्य और हिंसा के द्वारा
कितना भी लाभ हो हमारे लिये वह त्याज्य है। क्योंकि
वह लाभ लाभ नहीं किन्तु हानि रूप ही होगा।

—गांधी

लोभ की तृष्णा मानव जाति इस कदर हावी हो गई है कि वजाय इसके कि दौलत उनके कब्ज़े मे हो यह प्रतीत होता है कि दौलत ने उन पर कब्ज़ा कर रखा है।

—प्लिनी

× × × ×

रण क्षेत्र में खडे हो कर वहादुरी के साथ मौत का सामना करने वाले लोग तो वहुत है, मगर ऐसे लोग वहुत थोडे है जो विना काँपे हुए जनता के सामने रग मच पर खडे हो सके।

—तीरुवल्लुवर

× × × ×

विकारो की वृद्धि अथवा तृप्ति मे ही जगत् का कल्याण है, ऐसी कल्पना करना महा दोप मय है विकार रोके नही जा सकते अथवा उन्हे रोकने मे नुकसान है, यह कथन ही अत्यन्त अहित कर है।

—गाधी

× × × ×

अगर किसी आदमी के मन मे वुरे विचार है, तो उस पर दु ख इसी तरह आता है जैसे वैल के पीछे पहिया, अगर कोई पवित्र विचारो मे लीन रहता है तो उस के पीछे आनन्द ठीक उसी प्रकार आता है जैसे उस का साया।

—अज्ञात

तमाम प्रिय वस्तुओं और प्रिय जनों से एक दिन वियोग होने को है, इस बात का स्मरण रखने से मनुष्य प्रिय वस्तु अथवा प्रिय जन के अर्थ पापाचरण करने में प्रवृत्त नहीं होता।

—बुद्ध

× × × ×

जैसे चमचा पाक रस में फिरने पर भी रस नहीं जानता उसी प्रकार विषयासक्त पुरुष चारों वेदों और धर्म शास्त्रों को पढ़ लेने पर भी परमात्मा को नहीं जान सकते।

—महाभारत

× × × ×

अहिंसा और कायरता परस्पर विरोधी शब्द हैं। अहिंसा सर्व श्रेष्ठ सद् गुण है कायरता बुरी से-बुरी बुराई है। अहिंसा का मूल प्रेम में है कायरता का घृणा में। अहिंसक सदा कष्ट-सहिष्णु होता है कायर सदा पीड़ा पहुँचाता है। सम्पूर्ण अहिंसा उच्चतम वीरता है।

—गांधी

× × × ×

जो कलहकारी वचन नहीं कहता जो क्रोध नहीं करता जिस की इन्द्रियाँ प्रवचस है जो प्रशान्त है जो

सयम मे ध्रुव योगी (सर्वथा तल्लीन) रहता है, जो सकट आने पर व्याकुल नही होता, जो कभी योग्य कर्तव्य का अनादर नही करता, वही भिक्षु है।

—जिन वाणी

× × × ×

दो मनुष्य मरने पर व्यर्थ शोक करते है, एक तो वह जिसने अपनी सम्पत्ति का भोग न किया, दूसरा वह जिसने अपने ज्ञान के अनुसार व्यवहार नही किया।

—अज्ञात

× × × ×

सत्य ही जय पाता है, असत्य नही। सत्य से मोक्ष मार्ग स्पष्ट दिखाई देता है उस मार्ग से परमात्मा की इच्छा करने वाले ऋषि जाते हैं और सत्य के परम आश्रय–स्थान–ब्रह्म को प्राप्त करके मोक्षानन्द भोगते है।

—मुण्डकोपनिषद्

× × × ×

जो सासारिक विषयो तथा विषयी लोगो के ससर्ग से दूर रहता है और साधुजनो का ही सग करता है वही सच्चा प्रभु प्रेमी है, कारण, ईश्वर-परायण साधु जनो से प्रीति करना और ईश्वर से प्रीति करना एक समान है।

— कुरान

× × × ×

समझो ! क्यों नहीं समझते ?—परलोक में सबोधि का होना वास्तव में दुर्लभ है। बीती हुई रात्रियां वापिस नहीं आतीं जीवन भी बार बार मिलना सुलभ नहीं है।

—महावीर

× × ×

मैं उस पुरुष से घृणा करता हूँ जो पब्लिक सेवक हो कर धन जोड़ने मे लग जाए। सेवा धर्म सबसे बड़ा है कोई पुण्यवान ही सेवा कर सकता है।

—मिलोबाबी

× × × ×

भिक्षुओ ! मैं यह धर्म की नय्या तुम्हे केवल पार करने के लिए ही दी है इसे कन्धों पर उठाए मत फिरना। जीवन का कल्याण करने का उपाय करना।

—महात्मा बुद्ध

× × × ×

किसी के मान की रक्षा करना वीरों का काम तथा अभिमान की रक्षा करना कायरों का काम है।

—महात्मा गांधी

× × × ×

जिस प्रकार तुम्हे दुःख अप्रिय लगता है उसी प्रकार ससार सभी जीवों को दुःख अप्रिय लगता है। ऐसा जान

कर आत्मा की उपमा से सभी प्राणियो पर आदर एव उपयोग के साथ दया करो ।

—महावीर प्रवचन

× × × ×

झूठ से घृणा करो, परन्तु झूठे मनुष्य से नही। अगर तुम मनुष्य से घृणा करते हो तो मानो तुम उसे बुरे पथ पर अग्रसर होने की प्रेरणा दे रहे हो ।

—अज्ञात

× × × ×

सदाचार यह हमारे जीवन का सच्चा शृ गार है, जब कि दुराचार यह जीवन का क्षण भर मे भस्मीभूत कर देने वाला एक भयकर शोला ।

—अगार

× × × ×

तन्दुरुस्ती, जिस के वगैर जिन्दगी जीने लायक नही, सवेरे उठने, व्यायाम करने, गम्भीरता और सन्तुलित भोजन से क्यो न हासिल होगी ।

—कावेट

× × × ×

जो मनुष्य दुष्कर ब्रह्मचर्य का पालन करता है, उसे देव, दानव, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस और किन्नर आदि सभी नमस्कार करते हैं ।

—सन्मति वाणी

दूसरों के सौ दोषों की अपेक्षा अपने एक दोष को निवारण करना कहीं अधिक अच्छा है। जो दूसरों की बुराई की योजना बनाता है वैसा करने से पूर्व वह स्वयं बुरा बन जाता है।

—मयाण

× × × ×

अकल का मन से वही रिश्ता होता है जो तन्दुरुस्ती का जिस्म से। सहायताएं नहीं बाधाएं, सुविधाएं नहीं असुविधाएं जीवन का निर्माण करती हैं।

—पाये कोको

× × × ×

मूर्ख मनुष्य चाहे सोने का कोट पहन ले पर वह कोट फिर भी मूर्ख का ही कोट कहलायेगा।

—टीके रोज

× × × ×

जैसे सर्प एक काँचुली को छोड़ कर दूसरी ग्रहण करता है उसी प्रकार यह आत्मा भी एक देह को छोड़ कर दूसरी देह धारण करता है।

—गौतम गीता

× × × ×

सत्य को मनुष्य सब से बड़ी विपत्ति समझते हैं, लेकिन कौन कह सकता है कि यह सब से बड़ी देन नहीं है।

—मिन शोर

नीति गौरव को जन्म देने के लिए होती है। वडा मनुष्य अगर झुक कर चलता है तो इसी मे उस का गौरव छिपा है।

—अज्ञात

× × × ×

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य दिमाग को एक वहता झरना वनाना है, तालाव वनाना नही, जो नल से भरा जाता है, वह नल द्वारा खाली भी हो जाता है।

— जात मेमन

× × × ×

चरित्र दो चीज़ो से वनता है–आप की विचार धारा से और आप के अपना समय विताने के ढग से।

—ह्वेर्ड

× × × ×

आत्म–दोषो की आलोचना करने से पश्चाताप की भट्टी सुलगती है। और उस पश्चाताप को भट्टी मे सब दोषो को जलाने के वाद साधक परम वीत-रागभाव को प्राप्त करता है।

—भगवान महावीर

× × × ×

जो मनुष्य समस्त पापो को हृदय से निकाल वाहर

कर देता है जो विमल समाहित, और स्थिरात्मा हो कर संसार-सागर को लाँघ जाता है उसे ब्राह्मण कहते हैं।

—बुद्ध

× × × ×

हमें सत्य बोलना चाहिये। परन्तु ऐसा सच नहीं जो दूसरों को बुरा लगे और किसी की हानि में सहायक हो।

—प्रसाद

× × × ×

सरल हृदय निष्कपट साधक ही शुद्ध हो सकता है। शुद्ध मनुष्य के अन्तःकरण में ही धर्म ठहर सकता है। शुद्ध हृदय साधक घी से सिंचित अग्नि की तरह शुद्ध हो कर परम निर्वाण अर्थात उत्कृष्ट शान्ति को प्राप्त होता है।

—जिन वाणी

× × × ×

संसार के दुःख ही हमारे अनुभवों के दाता हैं। दुःख ही ऐसी पाठ्शाला है जहां हम जिन्दगी की सच्ची बातें सीख पाते हैं।

—प्रसाद

× × × ×

हमे अपने आप को लोगो मे वैसा ही जाहिर करना चाहिए, जैसे कि हम वास्तव मे हो। कोरी नुमाइश करना ठीक नही है।

—जवाहर लाल नेहरू

× × × ×

हम दुर्बल हैं—इस कारण गलती करते है और हम अज्ञानी है, इसलिए दुर्बल हैं। हमे अज्ञानी कौन वनाता है? हम स्वय ही। हम अपनी आँखो को अपने हाथो से ढाँक लेते हैं और अँधेरा है—कह कर रोते है।

—स्वामी विवेकानन्द

× × × ×

हमारा शरीर क्षण भगुर है। इस अस्थिर शरीर से हम जितना शुभ कार्य करें, उतना अच्छा है। जिस प्राणी के जीवन का ध्येय ही सेवा है उस के लिए अभिशाप कुछ भी नही, सब वरदान है।

—अज्ञात

पर-छिद्रान्वेष की अपेक्षा आत्म-निरीक्षण मानवता है। किसी के अपराध को भूलना और जमा कर देना मानवता है। वदला लेना नही, देना मानवता है।

—महात्मा गांधी

× × × ×

अनिगृहीत क्रोध और मान तथा प्रवर्द्धमान माया और लोभ—ये चारों ही कषाय पुनर्जन्म रूपी संसार-वृक्ष की जड़ों को सींचते है। अर्थात् कषायों से जन्म-मरण की वृद्धि होती है।

—सन्मति वाणी

× × × ×

मैंने अपनी जबान को झूठ बोल कर अपवित्र किया पर छिन्द्रा-वेषण—दूसरों में दोष निकालने को मैंने अपना गुण समझा और असली गुणों से दूर रह कर अपने चित्त को कलुषित किया।

—वैराग्य शतक

× × × ×

सोने से पहले तीन बातों का हिसाब अवश्य कर लेना चाहिए। पहली बात यह सोचो कि आज के दिन मुझ से कोई पाप तो नहीं हुआ है। दूसरी बात यह सोचो कि आज कोई उत्तम काम किया है या नहीं? तीसरी बात यह सोचो कि कोई करने योग्य काम मुझ से छूट गया है या नहीं।

—धम्मपद

× × × ×

जो मनुष्य जितना ही अन्तर्मुख होगा और जितनी ही उसकी वृत्ति सात्विक व निर्मल होगी उतनी ही वह की

वह सोच सकेगा और उतने ही दूर के परिणाम वह देख सकेगा।

—अज्ञात

× × × ×

जिस प्रकार सिंह मृग को पकड ले जाता है, उसी प्रकार अन्त समय मे मृत्यु भी मनुष्य को दबोच लेती है। उस समय माता, पिता, भाई आदि कोई भी उस के दु ख में भागोदार नही होते परलोक में उस के साथ नही जाते।

—सन्मति वाणी

× × × ×

नम्रता, प्रेम पूर्ण व्यवहार तथा सहनशीलता से मनुष्य तो क्या देवता भी तुम्हारे वश मे हो जाते है।

—तिलक

× × × ×

आपत्ति मे मनुष्य स्वय को पहचान लेता है। व्यक्ति जिसको प्रेम करता है उस के द्वारा सरलता से धोखा खा जाता है।

—मोलियर

× × × ×

धन का लालच, प्रेमियो का सम्बन्ध और यश की

इच्छा ये तुम्हारे मुक्त होने के मार्ग में बाधक हैं। इन से तुम्हें खुशी हासिल न होगी बल्कि हमेशा रंज रहेगा।

—वैराग्य शतक

× × × ×

ब्राह्मण वह है जो विद्या लेने तथा देने में लगा रहता है और निर्लोभी है तथा ईश्वर परायण हो कर जीवन व्यतीत करता है।

—वेद-वाणी

× × × ×

क्षत्रिय वह है जो अपने देश धर्म जाति की रक्षा में और असहाय पुरुषों की सहायता के लिये दुश्मनों का सामना करता है और हर समय रण क्षेत्र में तैयार रहता है।

—वेद-वाणी

× × × ×

वैश्य वह है जो देश का धन बढ़ाता है संसार में अपने देश की आर्थिक अवस्था में उन्नति कर स्वयं भी धन कमाता है तथा दूसरों को भी धन से लाभ पहुँचाता है।

—वेद-वाणी

× × × ×

शूद्र वह है जो सेवा करने मे लगा रहता है परन्तु बुद्धि का बल उस मे अधिक नही है। इस लिये उस की रुची विज्ञान कला कौशल तथा अन्य आध्यात्मिक विद्याओ मे कम है। वह सेवा मे अद्वितीय है।

—वेद वाणी

× × × ×

काम भोग शल्य रूप हैं, काम-भोग विष रूप हैं, काम-भोग दृष्टि विष सर्प के समान है। काम-भोगो की लालसा रखने वाले प्राणी उन्हे प्राप्त किये विना ही अतृप्त दशा मे एक दिन दुर्गति को प्राप्त हो जाते है।

—सन्मति वाणी

× × × ×

जगत भर के तमाम पौद्गलिक पदार्थ का मिलना सुलभ है, लेकिन सर्वज्ञ कथित सुधर्म मिलना दुर्लभ है, सिद्धात मे सपूर्ण विश्वास रखने की मति देवे, वही सच्चा ज्ञान है।

—जिन-वाणी

× × × ×

नदी अपने जल को वृक्ष अपने फल को आप स्वय भक्षण नही करते, खेती को उत्पन्न करने वाले मेघ स्वय उस को नही खाते वैसे ही सज्जनो की विभूति केवल दूसरो के लिये होती है।

—अज्ञात

जिन का हृदय शुद्ध है वे धन्य हैं क्योंकि उन्हें परमात्मा की प्राप्ति अवश्य ही होगी। अतएव यदि तुम शुद्ध नहीं हो तो फिर चाहे दुनिया का सारा विज्ञान तुम्हें अवगत हो परन्तु फिर भी उस का कुछ उपयोग न होगा।

—विद्या सागर

× × × ×

जिस तरह मकान बनाने के लिए पक्की ईंट की आवश्यकता पड़ती है उसी तरह मनुष्य को आगे बढ़ाने के लिए पक्का ज्ञान होना चाहिये।

—गांधी

× × × ×

लगातार बहने से मजिस मिस जाती है उसी तरह अज्ञानोदय के लिए ज्ञान का होना आवश्यक है। दुःख ही मनुष्य का सब से बड़ा अज्ञानोदय है।

—आचार्य भावे

× × × ×

जन्म और मरण ये दो ही संसार के मूल रोग हैं अतः सब रोगों की पूर्णतया उपेक्षा कर, इन दोनों की जड़-मूल से उखाड़ने की कोशिश करनी चाहिए।

—महात्मा

× × × ×

जव आदमी अपनी खूविया और अपने अहसान अपने मुह मे स्वय जतलाने लगता है तो वह अपनी ही आखो मे उस वक्त हल्का-हल्का-सा पड जाता है, अपनी खूवियो का वखान तो दूसरो की जवान से ही भला लगता है।

—अज्ञात

× × × ×

हे आर्य! यह काम-भोग चुभने वाले तीक्ष्ण काटें के समान हैं, विपय-वासना का सेवन करना तो वहुत ही दूर रहा, पर उस की इच्छा मात्र करने ही मे मनुष्य की दुर्गति होती है।

—जिन वाणी

× × × ×

जीव हिंसा से दूर रहना, पराये धन के हरण से डरना, सत्य वोलना, समयानुसार यथा शक्ति दान देना, पर-स्त्रियो की चर्चा मे मौन रहना, तृष्णा के प्रवाह को रोकना, वडे लोगो मे नम्रता रखना, प्राणी मात्र पर दया करना, वही सव शास्त्रो मे अप्रतिषिद्ध विधि वाला सर्वजन साधारण के कल्याण का मार्ग है।

—भर्तृहरि

× × × ×

जो मनुष्य दूसरों को दुःख देता है वह आर्य या भला पुरुष नहीं होता। आर्य कहलाने का वही अधिकारी होता है जो दूसरों को कष्ट नहीं देता तथा सब प्राणियों के प्रति दया भाव रखता है।

—धम्म पद

× × × ×

आत्मा कभी उत्पन्न नहीं होता है वह मरता भी नहीं है। ना ही यह हो कर पुनः होने वाला है। यह आत्मा अजन्मा है नित्य है शाश्वत है शरीर के नष्ट जाने पर भी इस का कभी नाश नहीं होता है।

—गीता

× × × ×

जो मनुष्य भयानक संसार रूपी सागर को पार करना चाहता है वह ज्ञान रूपी नौका का आश्रय लेकर सुख पूर्वक पार पहुँच सकता है। अर्थात् मुक्ति का सरल साधन ज्ञान ही है।

—प्रज्ञात

× × × ×

ज्ञान के साथ ही दर्शन की प्राप्ति होती है। दर्शन की प्राप्ति से चरित्र की प्राप्ति और चारित्र की प्राप्ति से

तप की प्राप्ति होती है। चारित्र की परिपूर्णता होने पर आत्मा सीधा मोक्ष की ओर जाता है। इस प्रकार मुक्ति प्राप्ति के चार साधनो मे ज्ञान को प्रथम स्थान दिया गया है।

—जिन-वाणी

× × × ×

जो उत्पन्न न हुआ हो, जो उत्पन्न हो कर मर गया हो और जो मूर्ख हो, इन तीन मे से पहले के दो अच्छे, पर अन्तिम अर्थात् मूर्ख पुत्र अच्छा नही। मूर्ख पुत्र न पैदा हुए अथवा पैदा हो कर मर गये लडके से भी गया बीता है। पहले के दो कभी-कभी ही दु ख उत्पन्न करते है, परन्तु मूर्ख तो पग–पग पर दु ख दायी होता है।

—नीति कार

× × × ×

बुद्धि की मूर्खता को हरती, वचनो मे सत्यता को सीचती, प्रतिष्ठा को बढाती, पाप को दूर करती, चित्त को प्रसन्न करती और दशो दिशाओ मे कीर्ति को फैलाती है बताओ तो यह सत् सगति मनुष्य को क्या नही करती है।

— भर्तृहरि

× × × ×

बेचारा अज्ञान प्राणी,क्या कर सकता है ? वह तो भले–

लोभी मनुष्य मे और अवगुण क्या चाहिये जो कुटिल है उसे पाप की क्या आवश्यकता यदि चित्त शुद्ध ही तो तीर्थो से क्या लाभ सत्य वक्ता को तप की क्या आवश्यकता सज्जन पुरुष को मित्रों की क्या कमी यश हो तो भूषणों की क्या आवश्यकता विद्यावान् को धन की क्या इच्छा और जिस का सर्वत्र अपयश है उस को मृत्यु की क्या आवश्यकता ?

—भर्तृहरि

× × × ×

सुख-दुःख को देने वाला अपना ही शुभ कर्म है। सुख दुःख का दाता ईश्वर या अन्य किसी दैवी शक्ति को समझना एक बड़ी भारी भ्रान्ति है। मनुष्य का 'मैं ही सब कुछ करता हूं' ऐसा अभिमान करना भी व्यर्थ है। वास्तव मे सारा ससार अपने कर्म रूप सूत्र से ही ग्रथित है।

—मनीषी सन्त

× × × ×

अगर आप स्वास्थ्य और दीर्घायु चाहते है तो धर्म-धन और सुख को पैदा करने वाले स्वास्थ्य के नियमों का पालन कीजिए।

—अज्ञात

× × × ×

विपय-वासना सेवन करने से आत्मा कर्मों के बन्धन से बँध जाती है। और उस को त्यागने से वह अलिप्त रहती है। अत जो काम-भोगो को सेवन करते हैं वे ससार-चक्र मे गोता लगाते रहते हैं, और जो इन्हे त्याग देते है, वे कर्मों से मुक्त हो कर अटल सुखो के धाम पर जा पहुँचते हैं।

—जिनवाणी

× × × ×

तुम उस व्यक्ति को भूल सकते हो, जिस के साथ तुम हँसे हो, किन्तु उस व्यक्ति को कदापि नही, जिसके साथ तुम रोये हो।

—सत विनोवा

× × × ×

जो अपनी गरीवी से सन्तुष्ट है वह वास्तव मे धन-वान है। वाक् सयम विश्व मैत्री की पहली सीढी है। महत्वाकाक्षा का मोती निष्ठुरता की सीपी मे पलता है।

—प्रसाद

× × × ×

ऋतु के, समय के अनुकूल आहार-विहार करने से सव कार्य वुद्धि पूर्वक विपयो मे आसक्त हो कर करने मे दान, शील तथा सुख दुख मे एक सा रहते से सत्य वादी

लोभी मनुष्य में और अवगुण क्या चाहिये जो कुटिल है उसे पाप की क्या आवश्यकता यदि चित्त शुद्ध हो तो तीर्थों में क्या लाभ सत्य वक्ता को तप की क्या आवश्यकता सज्जन पुरुष को मित्रों की क्या कमी यश हो तो भूषणों की क्या आवश्यकता विद्यावान् को धन की क्या इच्छा और जिस का सर्वत्र अपयश है उस को मृत्यु की क्या आवश्यकता ?

—भर्तृहरि

× × × ×

सुख-दुःख को देने वाला अपना ही शुभ कर्म है। सुख दुःख का दाता ईश्वर या अन्य किसी दैवी शक्ति को समझना एक बड़ी भारी भ्रान्ति है। मनुष्य का मैं ही सब कुछ करता हूं ऐसा अभिमान करना भी व्यर्थ है। वास्तव में सारा संसार अपने कर्म रूप सूत्र से ही ग्रथित है।

—गांधी

× × × ×

अगर आप स्वास्थ्य और दीर्घायु चाहते हैं तो धर्म-धन और सुख को पैदा करने वाले स्वास्थ्य के नियमों का पालन कीजिए।

—[illegible]

× × × ×

विषय-वासना सेवन करने से आत्मा कर्मों के बन्धन से बँध जाती है। और उस को त्यागने से वह अलिप्त रहती है। अत जो काम-भोगो को सेवन करते है वे ससार-चक्र मे गोता लगाते रहते हैं, और जो इन्हे त्याग देते है, वे कर्मों से मुक्त हो कर अटल सुखो के धाम पर जा पहुँचते हैं।

—जिनवाणी

× × × ×

तुम उस व्यक्ति को भूल सकते हो, जिस के साथ तुम हँसे हो, किन्तु उस व्यक्ति को कदापि नही, जिसके साथ तुम रोये हो।

—सत विनोवा

× × × ×

जो अपनी गरीवी से सन्तुष्ट है वह वास्तव मे धन-वान है। वाक् सयम विश्व मैत्री की पहली सीढी है। महत्वाकाक्षा का मोती निष्ठुरता की सीपी मे पलता है।

—प्रसाद

× × × ×

ऋतु के, समय के अनुकूल आहार-विहार करने से सब कार्य बुद्धि पूर्वक विषयो मे आसक्त हो कर करने मे दान, शील तथा सुख दुःख मे एक सा रहने से सत्य वादी

क्षमा शील रहने से तथा आदर्श पुरुषों का अनुसरण करने से मनुष्य नीरोग रहता है।

—प्रज्ञात

× × × ×

अभिमान दुःख का निदान है। विपत्तियाँ अभिमान के आश्रित हैं। अभिमान से सम्मान का क्षय होता है अभिमान क्षय करने योग्य है। अभिमान से अधिक कीर्ति का नाश करने वाला दूसरा कोई नहीं है। मान के अधीन दुःख रहता है। सुख का नाश करने वाले अहंकार में अपना गौरव मत समझो। हे अहंकार! तू दूर रह।

—नीति दीपिका

× × × ×

गुरु के वचनों को नहीं मानने वाला कठोर वचन बोलने वाला कुत्सित आचार वाला ऐसा शिष्य शान्त स्वभाव वाले गुरु को भी क्रोधी बना देता है। चित्त के अनुकूल चलने वाला विनीत एवं दक्ष शिष्य क्रोधी गुरु को भी प्रसन्न व शान्त कर देता है।

—जिन वाणी

× × × ×

जिस मनुष्य के पास पूर्व जन्म के बहुत से पुण्य हैं उसके लिए भयानक वन भी अच्छे नगर के समान हो जाता है।

सभी लोग उसके मित्र हो जाते हैं और सपूर्ण पृथ्वी भी उसके लिए रत्न-पूरित हो जाती है।

—भर्तृहरि

× × × ×

निर्धन मनुष्य प्रसन्न हो सकता है, पर प्रसन्न मनुष्य निर्धन नही। सफलता का मत्र है—खुली आखे, वन्द मुह।

—अज्ञात

× × × ×

अगर जीवन की महत्ता को खोजना है तो किसी धनिक के रग महल मे नही, वल्कि निर्जन श्मशान मे विखरी किसी अनामी आत्मा की राख मे खोजना।

—चित्र भानु

× × × ×

आत्मा स्वय ही अपने सुखो और दुखो का कर्ता है, भोक्ता है। मित्र-शत्रु भी यह स्वय ही है। अच्छे मार्ग पर चलने वाला आत्मा अपना मित्र वन जाता है और बुरे मार्ग पर चलने वाला आत्मा अपना शत्रु बन जाता है।

—जिन-वाणी

× × × ×

जो मनुष्य अपने मन की कल्पनाओ से अनेक उपाय सोच कर अज्ञान वश दूसरो को ठगते हैं, वे अज्ञानी अपनी

आत्मा को स्वर्गादि के सुख से वञ्चित रखते हैं तथा अपने स्वार्थ का अकस्मात् नाश कर बैठते हैं।

—नीति दीपिका

× × × ×

आरम्भ में क्षणिक आनन्द प्रदान करने वाली बेईमानी से प्राप्त की सम्पत्ति ही आखिर कार मनुष्य को विपत्ति के चक्कर में फंसा कर विदा हो जाती है।

—गीता

× × × ×

कैसा भी बड़ा भारी तप हो नीति मय जीवन के बिना वह रोता है। महानतम विजयी वह है जो संघर्षों से मोह और जीत से अनासक्ति रखता है। कर्तव्य पालन सफलता की सीढ़ी है।

—प्रसाद

× × × ×

तेजस्वी और सत्य व्रत के धारण करने वाले पुरुष लज्जादि गुणों को उत्पन्न करने वाली अपनी माता के समान शुद्ध हृदय वाली स्वतन्त्र प्रतिज्ञा को नहीं छोड़ते चाहे इस के लिए उन्हें अपना प्राण ही क्यों न त्यागना पड़े।

—भर्तृहरि

× × × ×

कृत कर्म का नाश नही होता है। जव तक कृत कर्म का उपयोग न कर लिया जाए या तपस्या द्वारा उसे क्षय न कर दिया जाए तव तक वह नष्ट नही होने पाता।

—जिन वाणी

× × × ×

इस मनुष्य लोक मे एक मनुष्य के द्वारा किए गए कर्मो का फल दूसरा नही भोगता है। जिसने जैसे शुभाशुभ कर्मो का उपार्जन किया है उन का उपभोक्ता भी वही होता है। कारण कि विना फल भोगे स्वकृत कर्मो से छुटकारा नही हो सकता।

—महाभारत

× × × ×

जाना ही है, तो जाओ, आए हो तो खुशी से जाओ। गए विना भला कैसे चलेगा ? लेकिन जाते-जाते भी स्वार्थ की दुर्गन्ध के वजाय स्नेह, सेवा, सदाचार एव सौजन्य की सुरभि अवश्य पीछे छोडते जाओ न! जिससे भी उस सुरभि की पुण्य-स्मृति पर हृदय के दो आँसू वहा सके।

—चित्र भानु

× × × ×

निर्मल चरित्र यह गुलाव के अतर जैसा है। जव तक यह तुम्हारे पास होगा, तव तक जैसे तुम्हे आनद पहुँचाएगा,

वस ही तुम्हारे सानिध्य में रहने वाले दूसरे लोगों को भी अपनी सुवास प्रदान करेगा।

—प्रधान

× × × ×

विनय-युक्त विद्या ही सच्ची विद्या है। जिस विद्या मे विनम्रता का प्रादुर्भाव न हो वह भला किस काम की? और ऐसी विनय हीन विद्या को अविद्या कहें तो क्या बुरा है?

—बेकन

× × × ×

हम हसेंगे तो ससार हस पड़ेगा किन्तु रोते समय तुम्ह अकेले ही रोना पड़ेगा क्योंकि यह मृत्यु लोक केवल हास्य का इच्छुक है रुदन तो इसके पास स्वयं अपना ही पर्याप्त है।

—ऐला व्हीलर विलकाक्स

× × × ×

चाहे कोई हमारी बात समझे या न समझे सक्षेप मे कहना हमेशा ही अच्छा है। संक्षेप ही प्रतिभा और बुद्धिमत्ता की आत्मा है।

—वाल्टर

× × × ×

अनेक प्रकार के बहुमूल्य पदार्थों से परिपूर्ण यह समग्र विश्व भी यदि किसी एक मनुष्य को दे दिया जाये, तब भी वह सन्तुष्ट नही होगा। अहो! मनुष्य की यह तृष्णा बडी दुष्पूर है।

—महावीर वाणी

× × × ×

सन्तोष महादोष रूप अग्नि को शान्त करने के लिए मेघ के समान है। इस को जो मनुष्य धारण कर लेते हैं, उनके घर मे मानो काम धेनु और कल्प वृक्ष उत्पन्न हो जाते हैं। चिन्तामणि रत्न उनके हाथ मे, तथा सम्पूर्ण धन-भण्डार उनके समीप मे आ जाता है, और सम्पूर्ण ससार उनके वश मे हो जाता है।

—नीति दीपिका

× × × ×

जो सामने तो मीठी-मीठी बातें करता है, लेकिन पीठ पीछे बुरा सोचता है और दिल मे कुटिलता रखता है ऐसे कुमित्र को छोडने मे ही भलाई है।

—रामायण

× × × ×

बुरे आदमी खाने-पीने के लिये जीते है, किन्तु भले

आदमी इस लिए खाते-पीते हैं कि वे जी सकें। पात्र अपात्र में बहुत भेद है—गाय घास खा कर दूध देती है सांप दूध पी कर जहर उगलता है।

—गुजरात

× × × ×

चन्द्रमा कहता है—मेरे पास जो प्रकाश था उसे तो सार विश्व मे बिखेर दिया है किन्तु जो प्रकाश कलंक है उसे मैंने अपने ही पास रखा है।

—रवीन्द्रनाथ टैगोर

× × × ×

जिसे अकेले भी अपने निर्विघ्न पथ पर चलने की हिम्मत है वही सच्चा बहादुर है। निर्विघ्न पथ पर अन्त तक वही चल सकता है जिस का पथ सत्य है तथा जिसे सत्पथ ही प्रिय है।

—हरि भाऊ उपाध्याय

× × × ×

जैसे कछुआ आपत्ति से बचने के लिए अपने अंगो को अपने शरीर में सिकोड़ लेता है उसी प्रकार पण्डितजन भी विषयों की ओर जाती हुई अपनी इन्द्रियों को आध्यात्मिक ज्ञान से सिकोड़ कर रखें।

—महावीर-वाणी

सूर्य के उदय और अस्त के साथ २ आयु भी घटती जाती है, तथा व्यापारादि मे चित्त नही भरता और जन्म, जरा, तथा मृत्यु देख कर भी मनुष्यो को चेत नही होता। इससे ज्ञात होता है कि संसार प्रमाद रूपी मदिरा से मत्त हो रहा है।

—भर्तृहरि

× × × ×

जो पुरुष अपने भोग-सुख के लिए अन्याय से गरीबो को लूट कर धन एकत्रित करता है वह पापी है। और जो मनुष्य प्राप्त वस्तुओ का यथा योग्य उपभोग करता हुआ अवशिष्ट धन को प्रसाद रूप मे ग्रहण करता है और उसी मे संतुष्ट रहता है, तो वह मानव जीवन का कर्तव्य पालन करता है।

—श्री शङ्कराचार्य

× × × ×

कभी हाथ पर हाथ रख कर, सुस्त न बैठो। कोई काम केवल विचार करने से ही नही बल्कि परिश्रम करने से होता है। परिश्रम के बिना कोई फल प्राप्त नही होता।

—अज्ञात

× × × ×

जो सत्य जानता है, मन मे, वचन मे और काया मे

सत्य का आचरण करता है वह परमेश्वर को पहचानता है। इससे वह त्रिकाल दर्शी हो जाता है। उसे इसी देह में मुक्ति प्राप्त हो जाती है।

—ज ... वाणी

× × × ×

मनुष्य जन्म से ही न तो मस्तक पर तिलक लगा कर आता है न यज्ञोपवीत। जो सत्कार्य करता है वह द्विज है और जो कुकर्म करता है वह नीच।

— बुद्ध

× × × ×

जो मनुष्य युद्ध मे दस लक्ष सुभटों को जीत ले उससे भी कहीं अधिक विजय का पात्र वह है जो अपनी आत्मा में स्थित काम क्रोध मद लोभ और माया आदि विषयों के साथ युद्ध करके और इन सभी को पराजित कर अपनी आत्मा को काबू में कर ले।

—जिन-वाणी

× × × ×

जो आदमी केवल आशा पर जीता है उसे भूखा मरना पड़ता है। जो काम प्रेम स निकलता है डर या मार से नहीं निकल सकता। जरूरत पूरी हो सकती है ख्वाहिश नहीं ईश्वरीय नियम है।

—पहलान

असतुष्ट व्यक्ति के लिए सभी कर्तव्य नीरस होते हैं। उसे तो कभी भी किसी वस्तु से सतोष नही होता। फलस्वरूप उस का जीवन असफल होना स्वाभाविक है।

—विवेकानन्द

× × × ×

हमने विषयो को भोगा नही उल्टे विषयो ने ही न हम को भोग भोग लिया, हम तप न तपे पर तप ने हमे तपा दिया और समय नही बीता परन्तु हमारी आयु अवश्य हो गई। परन्तु इतने होने पर भी तृष्णा कम नही हुई, बल्कि हमी वृद्ध हो गये।

—भर्तृहरि

× × × ×

मैं कहना चाहता हूँ कि प्रेम इतना मुश्किल नही है, जितना आदर मुश्किल है। दोषो के साथ भी हम प्रेम कर सकते हैं, लेकिन होना चाहिए आदर। आदर के बिना ब्रह्म विद्या सभव नही है।

—विनोबा

× × × ×

इस ससार—रूप समुद्र के परले पार जाने के लिए यह शरीर नौका के समान है जिस मे बैठ कर आत्मा नाविक—रूप होकर ससार-समुद्र को पार करता है।

—जिन वाणी

भला आदमी ही सदा प्रसन्न रह सकता है काम तेज वाला नहीं। पहले खूब सोच विचार लो और फिर जो फैसला करो उस पर अटल रहो। बहुत थोड़े आदमियों से अधिक जान पहचान रखो।

—प्लेटो

× × × ×

सत्य और अहिंसा का मार्ग खांडे की धार के जैसा है। खुराक ठीक तरह से ली जाय तो वह शरीर को पोषण देती है। इसी प्रकार अहिंसा का ठीक तरह से पालन किया जाय तो वह आत्मा को पोषण देती है।

—गांधी

× × × ×

जो आदमी अपनी मेहनत से पैदा कर सकता है उसे यह दिखाने के लिये कि उस का उस पर अधिकार है किसी भविष्य वाणी की आवश्यकता नहीं।

—रावर्ट इंगर सोल

× × × ×

महत्प्रयत्नों का मार्ग तो हमें सफलता और सुख की ओर अग्रसर करता है परन्तु अल्प प्रतिरोध वाला मार्ग हमें पराजय और दुख की ओर ले जाता है।

—अरविन्द

× × × ×

वन मे पशु-पक्षियो के साथ रहना, पत्तो के विस्तरे पर सोना, फटे-पुराने चीथडो को पहनना तथा एक ममय भोजन करके सो जाना श्रेयस्कर है, किन्तु वन्धुओ तथा सम्वन्धियो के पास धन हीन जीवन विताना उचित नही।

—ऋग्वेद

× × × ×

प्रत्येक स्थान पर ईश्वर को विद्यमान समझो, पाप से वचोगे। सच्चा सुख हमारे अन्दर है, वाहर ढूढना व्यर्थ। जो दूसरो का आदर करता है उसका भी आदर होता है।

—अज्ञान

× × × ×

स्वराज्य के लिए मित्र दृष्टि वाले, विस्तृत दृष्टि के लोग और ज्ञानी ये तीनो प्रकार के व्यक्ति योग्य होते हैं अर्थात् परस्पर झगडने वाले, सकीर्ण दृष्टि युक्त, अज्ञानी लोग स्वराज्य चलाने मे समर्थ नही हो सकते।

—ऋग्वेद

× × × ×

सम्यक् ज्ञान के प्रकाशन से अज्ञान, अश्रद्धान के छूट जाने से और राग-द्वेष के समूल नष्ट हो जाने से, एकान्त सुख रूप जो मोक्ष है, उस की प्राप्ति होती है।

—जिन वाणी

× × × ×

ऐसे भी व्यक्ति है जो अपने पास सब कुछ बताते हैं फिर भी उनके पास कुछ नही है। ऐसे भी है जो स्वयं को विपन्न बताते है फिर भी उनके पास अतुल सम्पदा है।

—बाइबिल

× × × ×

यदि मनुष्य (कभी) कर डाले तो पुन पुन न करे उस में रत न होवे (क्योंकि) पाप का सचय दुःख (का कारण) होता।

—गौतम बुद्ध

सदव ऐसे काम करो जिससे लोग मरने के बाद भी याद करें। अपने घर में मेल से रहना ही इस पृथ्वी पर स्वर्ग है। किसी को दुःख न देना सबसे बड़ा धर्म है। प्रेम मे ही प्रेम की उत्पति होती है।

—सुकरात

× × × ×

जिस धृतिवान् जितेन्द्रिय सत्पुरुष के मन वचन काया के योग नित्य वश में रहते हैं उसे ही लोक मे प्रति बुद्ध जीवी—सदा जागृति—कहा जाता है। सत्पुरुष हमेशा सयमी जीवन जीता है।

—भगवान् महावीर

× × × ×

जिसके पास स्वास्थ्य है उसके पास आशा है, और जिसके पास आशा है उसके पास सब कुछ है। समय मूल्यवान है, किन्तु सत्य समय से भी अधिक मूल्यवान है।

—अज्ञात

× × × ×

बकरे के जीवन का मूल्य मनुष्य के जीवन से कम नही है। जो जीव जितना अधिक अपग है, उतना ही उसे मनुष्य की क्रूरता से बचने के लिये मनुष्य का आश्रय पाने का अधिकार है।

—गाधी

× × × ×

अगरबत्ती की तरह स्वय जल कर दूसरो को सुवास देने वाले, अपना तिल-तिल शरीर जला कर दीपक की भाँति अधकार मे प्रकाश विकीर्ण करने वाले पुण्य, स्वभाव से ही सहज परोपकारी, करुण शील सत जन चिर वदनीय व परम श्रद्धेय हैं। सतो का जीवन धन्य है।

—पारस मल 'प्रसून'

× × × ×

एक क्षण की गफलत—एक छोटी सी भूल भूल कभी छोटी नही होती। नियम का हल्का सा उल्लघन भी

आत्मा पर उतना ही भार देगा जितना कोई बड़ा पाप शर्त यही है कि हमें अपनी मनुष्यता का ज्ञान हो।

—प्रभाव

× × × ×

सब इन्द्रियों को अच्छी तरह वश में कर आत्मा की (पापों से) अवश्य ही सतत रक्षा करनी चाहिए। जो आत्मा सुरक्षित नहीं होती वह जाति पथ में भिन्न भिन्न योनियों में जन्म-मरण ग्रहण करती है जो आत्मा सुरक्षित होती है वह सर्व दुःखों से मुक्त हो जाती है।

—जिन वाणी

× × × ×

अपनी शुद्ध सेवा के बल पर जो पद और सत्ता हमें मिलती है वह हमारे हृदय को उच्च बनाती है। जो सत्ता सेवा के नाम पर केवल बहुमत के बल पर प्राप्त की जाती है वह केवल भ्रम जाल है।

—गांधी

× × × ×

कुविचार मात्र हिंसा है। उतावलापन हड़बड़ाहट हिंसा है मिथ्या भाषण हिंसा है किसी का बुरा चाहना हिंसा है जिस की दुनियाँ को जरूरत है उस पर कब्जा रखना भी हिंसा है।

—भगवान् महावीर

अहकारी व्यक्ति अपने आप को इस तरह रखता है जैसे विना नीव की दीवार खडी हो। जो दिन रात दूसरो की बुराई करता है वास्तव मे वही सव से बुरा है।

—अज्ञात

× × × ×

मनुष्य-जीवन का अधिकाँश भाग यही विचारते-विचारते निकल जाता है कि मैं अब जीवन को नाश से बचाऊगा। फलत जीवन नष्ट हो जाता है और हम जीवित रहने के उपक्रम मे व्यस्त रह जाते है।

—इमसन

× × × ×

अत्याचार करने वाला उतना अपराधी नही है जितना कि अत्याचार सहने वाला। मेहनत शरीर को स्वास्थ्य, मस्तिष्क को साफ, हृदय को उदार और जेव को भरपूर रखती है।

—अज्ञात

× × × ×

अत्यन्त मधुर और सुगन्ध वाला फूल सलज्ज और विनीत होता है। अगर हम जीवन पथ पर फूल नही वखेर सकते, तो कम से कम उस पर हम मुस्कान तो वखेर सकते है।

—चार्ल्स डिकेन्स

जिसने अपने माता पिता को सुख नही दिया वह कभी भी जीवन में सुखी नहीं रह सकता। घृणा या बदला लेने की इच्छा से मानसिक रोग उत्पन्न होते हैं।

—प्रताप

× × × ×

मनुष्य को पशु-पक्षियों पर प्रभुत्व प्राप्त है वह उन्हें मार कर खाने के लिये नही बल्कि उनकी रक्षा के लिये है अथवा जिस प्रकार मनुष्य एक दूसरे का उपयोग करते है पर एक दूसरे को खाते नहीं उसी प्रकार पशु-पक्षी भी उपयोग के लिये है खाने के लिये नही।

—भगवान महावीर

× × × ×

गालियाँ निकालना बहुत ही बुरी आदत है इस से चरित्र पर असर तो पड़ता ही है लेकिन मनुष्य का स्तर भी गिर जाता है। अपने चरित्र से ऊंची चीज संसार में अन्य कोई चीज नही है।

—प्रताप

× × × ×

सच्ची मर्दानगी तो उसी में है कि मनुष्य अपने कुल को जिस में कि उस ने जन्म लिया है उच्च अवस्था में

लाए। सोये हुए व्यक्ति से कभी भी दिल्लगी या छेड खानी मत करो।

—तीरुवल्लुवर

× × × ×

दुर्बल चरित्र वाला मनुष्य उस सरकण्डे की भाति है जो हवा के हर झोंके पर झुक जाता है। मेरी समझ मे जिस से हम कुछ नही ले सकते, ऐसा ससार मे कोई नही है।

—गाधी

× × × ×

फल के आने से वृक्ष झुक जाते है, नव वर्षा के समय बादल झुक जाते है, सम्पति के समय सज्जन नम्र हो जाते हैं, परोपकारियो का स्वभाव ही ऐसा है। जीवन एक फूल है, प्रेम उस का मधु है।

—कालिदास

× × × ×

यह जीव अनेक जन्मो मे दु ख सहन करता हुआ धीरे-धीरे मनुष्य जन्म के बाधक कर्मों को नष्ट कर लेता है। तब कही कर्मों के भार से हलका हो कर मनुष्य जन्म को प्राप्त करता है।

—जिनवाणी

× × × ×

धन से सद्‌गुण नहीं उत्पन्न होते अपितु सद्‌गुणों से ही धन एवं अन्यान्य इच्छित वस्तुएं प्राप्त होती हैं। प्रेम के शब्द चाहे किसी प्रकार भी व्यक्त किये जायें सदव ही प्रिय होते हैं।

—सुकरात

× × × ×

जीवात्मा स्वयं कर्म करता है कर्म फल भी स्वयं ही भोगता है अरहट्ट घटी की तरह स्वयं ही विश्व में भ्रमण करता है। स्वर्ण अवसर प्राप्त होने पर स्वयं हो उस बन्धन से सदा के लिए सर्वथा मुक्त हो जाता है।

—चाणक्य

× × × ×

वह मनुष्य परम सुखी है जिसे सुबुद्धि प्राप्त है और जिस के पास विवेक का वास है। समुद्रों से बड़ी एक चीज है—आकाश। आकाश से बड़ी एक चीज है—मनुष्य की आत्मा।

—सुकरात

× × × ×

यदि सब अपनी रोटी के लिए खुद मेहनत करें तो सभी भेद भाव दूर हो जाए। किसी के कामों में बाधा मत डालो। अपना निर्धारित काम हमेशा पूरा करो।

× × × ×

जो वीर दुर्जय सग्राम मे लाखो योद्धाओ को जीतता है, यदि वह एक-मात्र अपनी आत्मा को जीत ले तो यह उस की सर्व श्रेष्ठ विजय है।

—जिनवाणी

× × × ×

ईश्वर एक है, भिन्न-भिन्न मत उस तक पहुचने के मार्ग है। धर्म के नाम पर झगडे व्यक्तिगत स्वार्थ भरे पाखण्ड हैं। किसी जीव को मत मारो, सत्य बोलो, हृदय को शुद्ध रखो।

—तत्त्व दर्शी

× × × ×

अन्धा वह नही है जिस की आख फूट गई। अन्धा तो वह है जो कि अपने दोषो को ढकता है। दूसरो को गाली मत दो या उन की बुराई मत करो।

—राजेन्द्र बाबू

× × × ×

अपने मित्रो के दोषो को देखने की अपेक्षा अपने शत्रुओ के गुणो को देखना हित कर है। अपने माता-पिता व गुरु जनो का आदर करो।

—एवेबरी

× × × ×

अज्ञान और दुःख-क्लेश रूप महान् अन्धकार से आवृत जो असुरों के प्रसिद्ध नाना प्रकार की योनियाँ और नरक रूप लोक हैं आत्मा की हत्या करने वाले जो कोई भी मनुष्य हों वे मर कर उन्हीं लोकों में बारबार जाते हैं।

—ईशावास्य १

× × × ×

मारना चाहते हो तो बुरी इच्छाओं को मारो। जीतना चाहते हो तो तृष्णाओं को जीतो। खाना चाहते हो तो क्रोध को खाओ।

—कृष्ण कुमार

× × × ×

हम चाहते तो शान्ति हैं पर हैं कर्त्तव्य से विमुख। ऐसे शान्ति के स्वप्न देखने वालों को धिक्कार है। वृद्धों और कमजोरों की सहायता करो। हमेशा उचित कार्य करो।

—एवेबरी

× × × ×

किसी भी प्राणी की हिंसा न करना ही ज्ञानी होने का सार है। मात्र इतना ही अहिंसा के सिद्धान्त का ज्ञान यथेष्ट है। और यही अहिंसा का विज्ञान है।

—सूत्रकृतांग

पहनना चाहते हो, तो नेकी का जामा पहनो । लेना चाहते हो केवल आशीर्वाद लो । बोलना चाहते हो तो मीठे वचन बोलो । छोडना चाहते हो, तो पाप तथा अत्याचार को छोडो ।

—अज्ञात

× × × ×

घर मे यदि दीपक न जले तो वह दारिद्रय का चिह्न है । हृदय मे ज्ञान का दीपक जलाना चाहिए । हृदय मे ज्ञान दीपक जला कर उस को देखो ।

—श्री रामकृष्ण परमहंस

× × × ×

ज्ञान के विना क्रिया व्यर्थ है और क्रिया के विना ज्ञान व्यर्थ है । इसलिये ज्ञान और क्रिया के मेल से ही कार्य सिद्धि होती है ।

—गौतमगीता

× × × ×

बोलो कम, सुनो अधिक । शायद इसीलिए भगवान ने तुम्हें कान दो व जीभ एक ही दी है । अच्छा चरित्र एक ऐसा अस्त्र है जो मुसीबतो की चट्टान को तोड देता है ।

—हर्ष

दोस्ती करने की रफ्तार धीमी रखो लेकिन जब दोस्ती हो जाए तब मजबूती से एक समान जारी रखो। पत्थर की वह चट्टान जो कमजोर लोगों की राह का रोड़ा है शक्तिशाली के लिए सफलता की सीढ़ी होती है ।

—[illegible]

× × × ×

संसार में अच्छा या बुरा कुछ नहीं है। केवल सोचने से ही ऐसा हो जाता है। मीठा बोलना भी सबसे बड़ा दान है।

—शेक्सपियर

× × × ×

शिक्षा केवल परीक्षा पास करने तक ही सीमित नहीं होनी चाहिये बल्कि पढ़ने की आदत बना लेनी चाहिये ।

—डा० राधाकृष्णन

× × × ×

अहिंसा मेरा सिद्धान्त नहीं अपितु मेरा धर्म है। जिस मे विद्या प्राप्त नहीं की और न वह शीलवान है फिर मनुष्य कहलाने योग्य नहीं ।

—महात्मा गांधी

× × × ×

श्रम ही आज का सव से वडा देवता है और आलस्य सव से वडा शत्रु। इच्छा शक्ति क्रियात्मक चरित्र है।

—अज्ञात

× × × ×

पशु मनुष्य से वोलना नही सीख सकता, लेकिन मनुष्य पशु से चुप रहना सीख सकता है। सावधानी और सोच समझ कर किया हर काम डर से छुटकारा दिला देता है।

—हर्ष

× × × ×

साधक को मधुर, तिक्त आदि रसो का सेवन वार-वार नही करना चाहिए। क्योकि रस इन्द्रियो को उत्तेजित करने वाले होते हैं।

—सन्मति-वाणी

× × × ×

स्वप्न मे राजा भिखारी हो जाता है और कगाल इन्द्र हो जाता है। परन्तु जागने पर लाभ या हानि कुछ भी नही होती। वैसे ही इस विषय रूप ससार को भी हृदय से (स्वप्नवत्) देखो।

—दोहावली

× × × ×

अत्याचार को सहना अहिंसा नहीं है, वरना कायरता है और हिंसा को प्रोत्साहन देना है । हिंसक की हिंसा का दमन ही सबसे बड़ी अहिंसा है ।

—प्रकाश

× × × ×

हे आर्य ! बुद्धिमान् मनुष्य वही है जो सम्यक ज्ञान को प्राप्त करता हुआ हिंसा से उत्पन्न होने वाले दुखों को कर्म बंध का हेतु और महा भयकारी मान कर, पापों से अपनी आत्मा को दूर रखता है ।

—निर्ग्रन्थ प्रवचन

× × × ×

आंधी हो या तूफान परन्तु यह मत भूलो कि इन के पीछे सूर्य चमक रहा है । दुराचार की दुष्टता तथा सदाचार की श्रेष्ठता समझावे वही सच्चा ज्ञान है ।

—प्रकाश

× × × ×

जिस वस्तु के देखने में कलंक लगता हो उसे न देखो जिस तरह चौथ के चांद को कोई नहीं देखता । खुद को देख खुद को जानना खुदा को जानना है ।

—श्री टी माथुर

× × × ×

आग लगाने वालो के भाग्य मे आग है और तलवार चलाने वालो के भाग्य मे तलवार है। जो दूसरो की राह मे काटे विछाते हैं, उन्हे फूलो की सेज कैसे मिलेगी।

—अज्ञात

× × × ×

पेट भर खाओ पेटी भर न रक्खो। दान वही है जो किसी को दीन नही वनाता। आहार शुद्धि का चित्त शुद्धि से निकट सम्बन्ध है इस लिये आहार सात्विक रखना चाहिए।

—विनोवा

× × × ×

अगर आत्मा एक है ईश्वर एक है तो अछूत कोई नही है। जो खुद मेहनत न करे उसे खाने का हक ही क्या ? खादी का मतलव है, जो देश के सभी लोगो की आर्थिक स्वतन्त्रता और समानता का आरम्भ।

—वापू

× × × ×

मानव के सामने एक मूल प्रश्न है कि वह अपने क्षण-भगुर जीवन को विश्व के इतिहास मे 'सत्य, शिव, सुन्दरम्' कैसे वनाता है।

—अमर वाणी

× × × ×

जन्म का दुःख है, जरा का दुःख है रोग और मरण का भी दुःख है। अहो! सारा संसार दुःख मय ही है। यहाँ प्रत्येक प्राणी जब देखो तब क्लेश ही पाता रहता है।

—सम्मतिवाणी

× × × ×

अन्धा वह नहीं है जिस की आँखें फूट गई हैं, अन्धा वह भी है जो अपने दोषों को ढाकता है।

—गांधी

× × × ×

मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि यदि नैतिक जीवन पर शिक्षा आधारित न होगी तो आने वाली महा विपत्ति से राष्ट्र बचाना नितांत असम्भव हो जायेगा।

—राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद

× × × ×

अगर भारत को बरबादी से बचाना है तो उसे अमेरिका एवं रूस व अन्य पश्चिमी देशों की उम्दा बातें लेनी चाहिये और उनकी लुभावनी मगर बरबाद करने वाली दौलत समेटने वाली नीति छोड़ देनी चाहिए।

—महात्मा गांधी

× × × ×

नम्रता ही स्वतन्त्रता की धात्री व माता है। कुछ लोग भ्रमवश अहंकार वृति को उसकी माता समझ बैठते हैं, परन्तु वह उसकी सौतेली माता है जो उसका सत्यानाश करती है।

—पं० रामचन्द्र शुक्ल

× × × ×

मौन ही मूर्खों का आवरण है और बुद्धिमानों का एक सद्गुण है, मौन के वृक्ष पर शान्ति के फल लगते हैं। मौन रखो, अपनी सुरक्षा करो। मौन कभी तुम्हारे साथ विश्वास-घात नहीं करेगा।

—अज्ञात

× × × ×

सिर मुंडा लेने से कोई साधु नहीं होता, ओम् का जाप करने से कोई ब्राह्मण नहीं होता, जंगल में वास करने से कोई मुनि नहीं कहलाता और कुशा के बने वस्त्र पहनने से कोई तपस्वी नहीं होता, समता धारण करने से साधु मुनि, तपस्वी होता है। कर्म से क्षत्रिय होता है, और कर्म से शूद्र होता है, ब्रह्मचर्य से ब्राह्मण होता है।

—जिनवाणी

× × × ×

जो गुणी होते हैं वे अपनी जिम्मेवारियों को याद सोचते हैं। जो गुण हीन होते है वे केवल अपने अधिकारों के नाम को रटा करते है।

—रविन्द्र नाथ टैगोर

× × × ×

यह विश्वास रखो कि तुम्हारा सच्चा मित्र वही है जो तुम्हारी भूलों को एकान्त में दर्शाता है। अपने आनन्द को भले ही बदल दो किन्तु अपने मित्रों को कभी न भूलो।

—हूर

× × × ×

अगर तुम सच्चे दिल से परिश्रमी हो तो अपने एक मिनट को भी बेकार मत जाने दो। जिस काम को तुम सोच सकते हो उसे फौरन ही शुरू कर दो।

—बरले

× × × ×

जो परिश्रम से थक कर चकना चूर नहीं हो जाता उस को लक्ष्मी नहीं मिलती। जो भाग्य के भरोसे बैठा रहता है उसका भाग्य भी बैठ जाता है। जो आगे बढ़ता है उस का भाग्य भी आगे बढ़ता है। इस लिए हमेशा आगे बढ़ो।

—देलरेम

× × × ×

अगर तुम्हे अपने जीवन से प्रेम है तो समय को मत वरवाद करो। क्योकि जीवन समय से ही वना है। जिस परिश्रम में हमे आनन्द आता है, वह रोगो के लिए अमृत है।

—शेक्सपीयर

× × × ×

आत्मा का साथी उसका अपना किया हुआ कर्म ही होता है। इसके आधीन होकर यह जीव स्त्री, पुत्र, पशु, धन, भूमि गृह अन्न को छोड कर अपने शुभाशुभ कर्मानुसार अच्छे या बुरे स्थान को प्राप्त करता है।

—जिनवाणी

× × × ×

जिस के हृदय मे अहिसा घर कर जाती है, उसके समीप प्राणियो की सहज वैर वृति-शत्रुता नष्ट हो जाती है। अहिसा कायरो का धर्म नही वल्कि वह वीर व साहसी पुरुषो का धर्म है।

—वाल गगाधर तिलक

× × × ×

लोहा जब एक बार पारस को छू कर सोना हो जाता है तब चाहे मिट्टी के भीतर रखा या कूड़े में फेंक दो वह जहाँ रहेगा सोना ही रहेगा लोहा न होगा । इसी प्रकार जो प्रभु को पा चुका है उसकी भी यही दशा है। वह बस्ती में रहे या जंगल में ।

—प्रसाद

× × × ×

सत्य ही एक धर्म की प्रथम प्रतिष्ठा है और सत्य ही परमेश्वर है। सत्य ही सब से बड़ी वस्तु है जिसे हर एक मनुष्य अपने पास रख सकता है । धर्म में असत्य को कभी काई स्थान नहीं है ।

—म गांधी

× × × ×

खुशामद एक खोटा सिक्का है। इसे वही काम में लाते हैं जिन के मन में खोट होती है। मेहनती और ईमानदार कभी इस खोटे सिक्के को काम में नहीं लाते ।

—दादा

× × × ×

जो मनुष्य दूसरों से बैर रखते हैं तथा जिन की पराई स्त्री में पराये धन में और पर निन्दा में आसक्ति है वे

पामर पाप मय मनुष्य नर-देह धारण किये हुए राक्षस हो है।

—गोस्वामी तुलसीदास

× × × ×

जो मनुष्य सुन्दर और प्रिय भोगो को पाकर भी पीठ फेर लेता है, सब प्रकार से स्वाधीन भोगो का परित्याग कर देता है, वही सच्चा त्यागी कहलाता है।

—सन्मति-वाणी

× × × ×

प्रेम और मोह दोनो दो अलग-अलग चीजे हैं। दोनो को एक समझना भारी भूल है। प्रेम आत्मा को विकसित करता है, विराट बनाता है और मोह आत्मा को सकुचित करता है, क्षुद्र बनाता है। प्रेम निष्काम भावना की शुद्ध स्नेहानुभूति है, तो मोह स्वार्थ की दूषित अनुरक्ति।

अमर वाणी

× × × ×

मनुष्य स्वय ही अपना मित्र तथा शत्रु है। जब उसकी इन्द्रियाँ मन के अनुकूल होती है तभी वह मित्र बन जाता है, और प्रतिकूल होने पर वही शत्रु बन जाता है।

—अज्ञात

मिथ्यात्व परम रोग है और मिथ्यात्व परम अन्धकार है यही परम शत्रु तथा परम विष है। रोग अन्धकार, शत्रु तथा विष एक जन्म में ही दुःख देते हैं परन्तु मिथ्यात्व सहस्त्रों भवों में दुःख देता है।

—महावीर वाणी

× × × ×

ओ मानव! जब कोई जरूरतमन्द तेरे द्वार पर आए, तो हृदय से उस का स्वागत कर। भारतीय संस्कृति अतिथि को अतिथि नहीं भगवान मानती है। अतिथि की सेवा ईश्वर भाव से करो इसी में जीवन की सफलता है।

—अमर वाणी

× × × ×

तप हंस और वकील एक जैसे हैं। हंस अपनी चोंच द्वारा दूध पानी पृथक २ कर देता है। वकील अपनी वाक शक्ति द्वारा लड़ते हुए दो व्यक्तियों को पृथक करता है और उसी प्रकार तप आत्म प्रदेशों पर लगे हुए कर्मों को पृथक कर देता है।

—प्रकाश

× × × ×

जो मनुष्य महापुरुषो के विचारो को सुनकर या पढकर हृदय मे धारण करता है, और मनन-चिन्तन करके उनका आचरण करता है, उस आत्मा का कल्याण होता है। क्योकि महापुरुषो के विचारो से अनेक प्रकार की शिक्षाये प्राप्त होती हैं।

—सत वाणी

× × × ×